CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री शांतिनाथ पूजा विधान

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री शांतिनाथ पूजा विधान

सं. 4519
2-8-99
(श्री. दि. जै. वि.) वाराणसी

सम्पादक : वाणीभूषण बा. ब्र. भूरामल जी ब्रह्मचारी
(आचार्य ज्ञानसागर)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथम संस्करण से

दो शब्द ..

बन्धुओं ! आजकल संसार के जितने भी प्राणी हैं, वे प्रायः धन दौलत पुत्र पौत्रादिक की प्राप्ति के लोभ में फँसकर खोटे से खोटे मिथ्यामार्ग को अपना लेते हैं, अर्थात् मिथ्यामार्ग को ही सच्चा मार्ग मान बैठते हैं। जिसका परिणाम बहुत ही अनिष्टकारक, भवभवान्तर में दुःख दायक एवं प्राणों को हरण करने वाला हो जाताहै, आपको मालूम होना चाहिए कि इस भयानक संसार में देहधारियों के अनिष्ट करने वाला एवं नरक कूप में डालने वाला मिथ्यात्व के बराबर शत्रु नहीं है, सर्प यदि डस लेवे तो इसी भव में उससे पिंड छूट जाता है, या औषधोपचार मंत्रादिक के प्रयोग से उसका प्रतिकार कर लिया जाता है, किन्तु मिथ्यात्व रूपी सर्प के काटे हुए प्राणी इस भयानक दुःख दायक संसार में गोता लगाया ही करेंगे। इसकी न औषधि है और न मंत्रादिक ही है, इस मिथ्यात्व रूपी सर्प (मार्ग से) तभी छुटकारा पा सकता है जबकि यह संसारी प्राणी मिथ्यामार्ग को उगलकर सच्चे देव शास्त्र गुरुवों पर एवं उनके कहे हुये तत्वों पर दृढ़ श्रद्धा एवं भक्ति करेगा।

बहुत सी हमारी माता बहिनें धन पुत्र पौत्रादिक के लोभ से मज्जित मठ पीर पालिया कालिका भवानी चंडी मुंडी देवियों को धोकने के लिए एवं झाड़ा झपटा दिलाने के लिए भंगी चमार मुसलमानादिक घर में पहुँच जातीहैं, और अपनी इज्जत एवं धन दौलत को मिट्टी के ढेले के मोल लुटा देती हैं।

उनसे सानुरोध निवेदन है कि वे इस भयानक संसार से बचना चाहती है अथवा मिथ्यात्व रूपी सर्प से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छुटकारा चाहती हैं, तो इन उपरोक्त क्रियाओं को जो कि भयानक नरक-कूप में डालने वाली हैं, उनको हृदय से बिलकुल निकाल कर वीतराग के द्वारा कथित मार्ग को अपनावेंगे तबी आत्म कल्याण होगा

माता बहिनें एवं भाइयों को मालूम होना चाहिये, कि हमारे जैन धर्म के जैनाचार्यों द्वारा बताये गये कई तरह के मन्त्र तन्त्र एवं पूजा पाठ हैं जिनके कि ऊपरं विश्वास करके काम में लाने से इन सांसारिक वस्तुओंकी तो बात ही क्या किन्तु स्ववर्गापवर्ग की भी प्राप्ति हो जाते हैं ।
तदनुसार ही यह शांतिनाथ पूजन विधि सहित करने से धन दौलत पुत्र पौत्रादिक गृहशांति स्वर्गापवर्ग की प्राप्ति होती है, अर्थात् जो मनुष्य जैसी भावना लेकर इस पूजन विधान को भक्ति से करेगा उसको वैसे ही मनोवांछित फल की प्राप्ति होगी

यह पूजन पाठ औरंगाबाद जिले के अन्तर्गत गणोरी नामक गाँव के शास्त्र भंडार में जीर्ण पत्रों पर लिखी हुई मिली थी, इसके रचयिता श्री दि. जैन मूल संघ कुन्दकुन्दाम्नय में श्री सकलकीर्ति के शिष्य जिनदास कवि हैं, यह पुस्तिका पहले २ बार छप चुकीहै किन्तु प्रतियाँ समाप्त हो जाने से परम पूज्य आचार्य श्री १०८ श्री मुनि वीरसागरजी महाराज केप्रधान शिष्य आचार्य श्री शिवसागरजी की आज्ञा से इसका चौथी बार प्रकाशन हो रहा है, दोबार में इसका संशोधन ठीक नहीं हुआ था किन्तु अबकीबार पू. ब्र. भूरामलजी शास्त्री ने इसका अच्छा संशोधन किया है जहाँ श्लोकों की कमी थी उनकी पूर्ति एवं अशुद्धियां दूर करने की आपने बड़ी मेहनत की है एतदर्थ आप कोटिशः धन्यवाद के पात्र हैं ।

ब्र. सूरजमल जैन
स्व. आचार्य श्री मुनि वीरसागरजी महाराज के पट्टाधीश
आचार्य श्री शिवसागरजी संघ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेरक प्रसंग : प. पू. आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परमशिष्य मुनि श्री सुधासागरजी महाराज, क्षु. श्री गम्भीर सागरजी, क्षु. श्री धैर्य सागरजी महाराज के ऐतिहासिक १९९४ के श्री सोनी जी की नसियाँ, अजमेर के चातुर्मास के उपलक्ष्य में प्रकाशित।

ट्रस्ट संस्थापक : स्व. पं. जुगल किशोर मुख्तार

ग्रन्थमाला सम्पादक डॉ. दरबारी लाल कोठिया न्यायाचार्य, बीना
एवं नियामक : (मध्य प्रदेश)

संस्करण : द्वितीय प्रति : 2000

मूल्य : स्वाध्याय (नोट :- डाक खर्च भेजकर प्रति निशुल्क प्राप्ति स्थान से मंगा सकते है।

प्राप्ति स्थान :

* सोनी मंन्दिर ट्रस्ट
सोनीजी की नसियाँ, अजमेर (राज.)

* श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अतिशय क्षेत्र
मन्दिर संघी जी, सांगानेर जयपुर (राज.)

* डा. शीतलचन्द जैन
मंत्री – श्री वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट
१३१४ अजायब घर का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

—: आशीर्वाद एवं प्रेरणा :—

मुनि श्री सुधासागरजी महाराज

क्षु. श्री गंभीर सागरजी, एवं क्षु. श्री धैर्य सागरजी महाराज

सौजन्यता :

....

....

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन समिति एवं सकल दिगम्बर जैन समाज,

अजमेर (राज.)

प्रकाशन :

वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट, जयपुर

-: मुद्रण एवं लेज़र टाइप सैटिंग :-

निओ ब्लॉक एण्ड प्रिन्टर्स

पुरानी मण्डी, अजमेर फोन : 22291

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेरक प्रसंग : प. पू. आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परमशिष्य मुनि श्री सुधासागरजी महाराज, क्षु. श्री गम्भीर सागरजी, क्षु. श्री धैर्य सागरजी महाराज के ऐतिहासिक १९९४ के श्री सोनी जी की नसियाँ, अजमेर के चातुर्मास के उपलक्ष्य में प्रकाशित।

ट्रस्ट संस्थापक : स्व. पं. जुगल किशोर मुख्तार

ग्रन्थमाला सम्पादक डॉ. दरबारी लाल कोठिया न्यायाचार्य, बीना
एवं नियामक : (मध्य प्रदेश)

संस्करण : द्वितीय प्रति : 2000

मूल्य : स्वाध्याय (नोट :- डाक खर्च भेजकर प्रति निशुल्क प्राप्ति स्थान से मंगा सकते है।

प्राप्ति स्थान :

* सोनी मंन्दिर ट्रस्ट
सोनीजी की नसियाँ, अजमेर (राज.)

* श्री दिगम्बर जैन मन्दिर अतिशय क्षेत्र
मन्दिर संघी जी, सांगानेर जयपुर (राज.)

* डा. शीतलचन्द जैन
मंत्री – श्री वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट
१३१४ अजायब घर का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

-: आशीर्वाद एवं प्रेरणा :-

मुनि श्री सुधासागरजी महाराज

क्षु. श्री गंभीर सागरजी, एवं क्षु. श्री धैर्य सागरजी महाराज

सौजन्यता :

....

....

प्रकाशक :

श्री दिगम्बर जैन समिति एवं सकल दिगम्बर जैन समाज,
अजमेर (राज.)

प्रकाशन :

वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट, जयपुर

-: मुद्रण एवं लेज़र टाइप सैटिंग :-

निओ ब्लॉक एण्ड प्रिन्टर्स

पुरानी मण्डी, अजमेर फोन : 22291

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकीय

जैन साहित्य और इतिहास के मर्मज्ञ एवं अनुसंधाता स्वर्गीय सरस्वतीपुत्र पं. जुगल किशोर जी मुख्तार "युगवीर" ने अपनी साहित्य इतिहास सम्बन्धी अनुसन्धान- प्रवृत्तियों को मूर्त्तरुप देने के हेतु अपने निवास सरवासा (सहारनपुर) में "वीर सेवा मंदिर" नामक एक शोध संस्था की स्थापना की थी और उसके लिए क्रीत विस्तृत भूखण्ड पर एक सुन्दर भवन का निर्माण किया था, जिसका उद्घाटन वैशाख सुदि 3 (अक्षय-तृतीया), विक्रम संवत् 1993, दिनांक 24 अप्रैल 1936 में किया था । सन् 1942 में मुख्तार जी ने अपनी सम्पत्ति का "वसीयतनामा" लिखकर उसकी रजिस्ट्री करा दी थी । "वसीयतनामा" में उक्त "वीर सेवा मन्दिर" के संचालनार्थ इसी नाम से ट्रस्ट की भी योजना की थी, जिसकी रजिस्ट्री 5 मई 1951 को उनके द्वारा करा दी गयी थी। इस प्रकार पं. मुख्तार जी ने वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट की स्थापना करके उनके द्वारा साहित्य और इतिहास के अनुसन्धान कार्य को प्रथमतः अग्रसारित किया था ।

स्वर्गीय बा. छोटेलालजी कलकत्ता, स्वर्गीय ला. राजकृष्ण जी दिल्ली, रायसाहब ला. उल्फतरायजी दिल्ली आदि के प्रेरणा और स्वर्गीय पूज्य क्षु. गणेश प्रसाद जी वर्णी (मुनि गणेश कीर्ति महाराज) के आशीर्वाद से सन् 1948 में श्रद्धेय मुख्तार साहब ने उक्त वीर सेवा मन्दिर का एक कार्यालय उसकी शाखा के रुप में दिल्ली में, उसके राजधानी होने के कारण अनुसन्धान कार्य को अधिक व्यापकता और प्रकाश मिलने के उद्देश्य से, राय साहब ला.उल्फतराय जी के चैत्यालय में खोला था । पश्चात् बा. छोटे लालजी,साहू शान्तिप्रसाद जी और समाज की उदारतापूर्ण आर्थिक सहायता से उसका भवन भी बन गया, जो 21 दरियागंज दिल्ली में स्थित है और जिसमें "अनेकान्त" (मासिक) का प्रकाशन एवं अन्य साहित्यिक कार्य सम्पादित होते हैं । इसी भवन में सरसावा से ले जाया गया विशाल ग्रन्थागार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

है, जो जैनविद्या के विभिन्न अङ्गो पर अनुसन्धान करने के लिये विशेष उपयोगी और महत्वपूर्ण है ।

वीर-सेवा मन्दिर ट्रस्ट गंथ-प्रकाशन और साहित्यानुसन्धान का कार्य कर रहा है । इस ट्रस्ट के समर्पित वयोवृद्ध पूर्व मानद मंत्री एवं वर्तृमान में अध्यक्ष डा. दरबारी लालजी कोठिया बीना के अथक परिश्रम एवं लगन से अभी तक ट्रस्ट से 38 महत्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है । आदरणीय कोठियाजी के ही मार्गदर्शन में ट्रस्ट का संपूर्ण कार्य चल रहा है । अतः उनके प्रति हम हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करते हैं और कामना करते हैं कि वे दीर्घायु होकर अपनी सेवाओं से समाज को चिरकाल तक लाभान्वित करते रहें। ट्रस्ट के समस्त सदस्य एवं कोषाध्यक्ष माननीय श्री चन्द संगल एटा, तथा संयुक्त मंत्री ला.सुरेशचन्द्र जैन सरसावा का सहयोग उल्लेखनीय है । एतदर्थ वे धन्यवादार्ह हैं ।

संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागरजी के परम शिष्य पूज्य मुनि 108 सुधासागर जी महाराज के आर्शीवाद एवं प्रेरणा से दिनांक 9 से 11 जून 1994 तक श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर संघीजी सागांनेर में आचार्य विद्यासागरजी के गुरु आचार्य प्रवर ज्ञानसागरजी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व परअखिल भारतीय विद्वत संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इस संगोष्ठी में निश्चय किया था कि आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज के समस्त ग्रन्थों का प्रकाशन किसी प्रसिद्ध संस्था से किया जाय । तदनुसार समस्त विद्वानों की सम्मति से यह कार्य वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट ने सहर्ष स्वीकार कर सर्वप्रथम वीरोदयकाव्य के प्रकाशन की योजना बनाई और निश्चय किया कि इस काव्य पर आयोजित होने वाली गोष्ठी के पूर्व इसे प्रकाशित कर दिया जाय । परम हर्ष है कि पूज्य मूनि 108 सुधासागार महाराज का संसघ चातुर्मास अजमेर में होना निश्चय हुआ और महाराज जी के प्रवचनों से प्रभावित होकर श्री दिगम्बर जैन समिति एवम् सकल दिगम्बर जैन समाज अजमेर ने पूज्य आचार्य ज्ञान सागर जी महाराज के वीरोदय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काव्य सहित समस्त ग्रन्थों के प्रकाशन एवं संगोष्ठी का दायित्व स्वयं ले लिया और ट्रस्ट को आर्थिक निर्भार कर दिया । एतदर्थ ट्रस्ट अजमेर समाज का इस जिनवाणी के प्रकाशन एवं ज्ञान के प्रचार प्रसार के लिये आभारी है ।

प्रस्तुत कृति **श्री शांतिनाथ पूजा विधान** के प्रकाशन में जिन महानुभाव ने आर्थिक सहयोग एवं प्रूफ रिडिंग में श्री कमलकुमारजी बड़जात्या ने अथक परिश्रम किया तथा मुद्रण में निओ ब्लॉक एण्ड प्रिन्ट्स, अजमेर ने उत्साह पूर्वक कार्य किया है। वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं ।

अन्त में उस संस्था के भी आभारी है जिस संस्था ने पूर्व में यह ग्रन्थ प्रकाशित किया था । अब यह ग्रन्थ अनुपलब्ध है । अतः ट्रस्ट इसको प्रकाशित कर गौरवान्वित है । जैन जयतुं शासनम् ।

दिनाङ्क : 13-14-15 अक्टूबर 1994
वीरोदय महाकाव्य पर अ. भा. विद्वत संगोष्ठी

डॉ. शीतल चन्द जैन
मानद मंत्री
वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट
1314 अजायब घर का रास्ता
किशनपोल बाजार, जयपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आचार्य श्री ज्ञानसागर जी की जीवन यात्रा आँखों देखी

आलेख - निहाल् चन्द्र जैन्
सेवा निवृत्त प्राचार्य
मिश्रसदन सुन्दर विलास, अजमेर

प्राचीन काल से ही भारत वसुन्धरा ने अनेक महापुरुषों एवं नर-पुंगवों को जन्म दिया है । इन नर-रत्नों ने भारत के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक एवं शौर्यता के क्षेत्र में अनेकों कीर्तिमान स्थापित किये हैं । जैन धर्म भी भारत भूमि का एक प्राचीन धर्म हैं, जहाँ तीर्थंकर, श्रुत केवली, केवली भगवान के साथ साथ अनेकों आचार्यों, मुनियों एवं सन्तों ने इस धर्म का अनुसरण कर मानव समाज के लिए मुक्ति एवं आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है ।

इस १९-२० शताब्दी के प्रथम दिगम्बर जैनाचार्य परम पूज्य, चारित्र चक्रवर्ती आचार्य १०८ श्री शांतिसागर जी महाराज थे जिनकी परम्परा में आचार्य श्री वीर सागरजी, आचार्य श्री शिव सागरजी इत्यादि तपस्वी साधुगण हुये. । मुनि श्री ज्ञान सागरजी आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज से वि. स. २०१६, में खानियाँ (जयपुर) में मुनि दीक्षा लेकर अपने आत्मकल्याण के मार्ग पर आरूढ़ हो गये थे । आप शिवसागर आचार्य महाराज के प्रथम शिष्य थे।

मुनि श्री ज्ञान सागर जी का जन्म राणोली ग्राम (सीकर-राजस्थान) में दिगम्बर जैन के छाबड़ा कुल में सेठ सुखदेवजी के पुत्र श्री चतुर्भुज जी की धर्म पत्नि घृतावरी देवी की कोख से हुआ था । आपके बड़े भ्राता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री छगनलालजी थे तथा दो छोटे भाई और थे तथा एक भाई का जन्म तो पिता श्री के देहान्त के बाद हुआ था। आप स्वयं भूरामल के नाम से विख्यात हुये। प्रारम्भिक शिक्षा गाँव के प्राथमिक विद्यालय में हुई। साधनों के अभाव में आप आगे विद्याध्ययन न कर अपने बड़े भाई जी के साथ नौकरी हेतु गयाजी (बिहार) आगये। वहां १३-१४ वर्ष की आयु में एक जैनी सेठ के दुकान पर आजीविका हेतु कार्य करते रहे। लेकिन आपका मन आगे पढ़ने के लिए छटपटा रहा था। संयोगवश स्याद्वाद महाविद्यालय वाराणसी के छात्र किसी समारोह में भाग लेने हेतु गयाजी (बिहार) आये। उनके प्रभावपूर्ण कार्यक्रमों को देखकर युवा भूरामल के भाव भी विद्या प्राप्ति हेतु वाराणसी जाने के हुए। विद्या-अध्ययन के प्रति आपकी तीव्र भावना एवं दृढ़ता देखकर आपके बड़े भ्राता ने १५ वर्ष की आयु में आपको वाराणसी जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी।

श्री भूरामल जी बचपन से ही कठिन परिश्रमी अध्यवसायी, स्वांवलम्बी, एवं निष्ठावान थे। वाराणसी में आपने पूर्ण निष्ठा के साथ विद्याध्ययन किया और संस्कृत एवं जैन सिद्धान्त का गहन अध्ययन कर शास्त्री परीक्षा पास की। जैन धर्म से संस्कारित श्री भूरामल जी न्याय, व्याकरण एवं प्राकृत ग्रन्थों को जैन सिद्धान्तानुसार पढ़ना चाहते थे, जिसकी उस समय वाराणसी में समुचित व्यवस्था नहीं थी। आपका मन क्षुब्ध ही उठा, परिणामतः आपने जैन साहित्य, न्याय और व्याकरण को पुनःर्जीवित करने का भी दृढ़ संकल्प ही लिया। अढ़िग विश्वास, निष्ठा एवं संकल्प के धनी श्री भूरामल जी ने कई जैन एवं जैनेन्तर विद्वानों से जैन वाँङ्गमय की शिक्षा प्राप्त की। वाराणसी में रहकर ही आपने स्याद्वाद महाविद्यालय से "शास्त्री" की परीक्षा पास कर आप पं. भूरामल जी नाम से विख्यात हुए। वाराणसी में ही आपने जैनाचार्यों द्वारा लिखित न्याय, व्याकरण, साहित्य, सिद्धान्त एवं अध्यात्म विषयों के अनेक ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया।

बनारस से लौट कर आपने अपने ही ग्रामीण विद्यालय में अवैतनिक अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया, लेकिन साथ में, निरन्तर साहित्य साधना एवं साहित्य लेखन के कार्य में भी अग्रसर होते गये। आपकी लेखनी से एक से एक सुन्दर काव्यकृतियाँ जन्म लेती रही। आपकी तरुणाई विद्वता और आजीविकोपार्जन की क्षमता देखकर आपके

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विवाह के लिए अनेकों प्रस्ताव आये, सगे सम्बन्धियों ने भी आग्रह किया। लेकिन आपने वाराणसी में अध्ययन करते हुए ही संकल्प ले लिया था कि आजीवन ब्रह्मचारी रहकर माँ सरस्वती और जिनवाणी की सेवा में, अध्ययन-अध्यापन तथा साहित्य सृजन में ही अपने आपको समर्पित कर दिया। इस तरह जीवन के ५० वर्ष साहित्य साधना, लेखन, मनन एवं अध्ययन में व्यतीत कर पूर्ण पांडित्य प्राप्त कर लिया। इसी अवधि में आपने दयोदय, भद्रोदय, वीरोदय, सुदर्शनोदय आदि साहित्यिक रचनायें संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में प्रस्तुत की वर्तमान शताब्दी में संस्कृत भाषा के महाकाव्यों की रचना की परम्परा को जीवित रखने वाले मूर्धन्य विद्वानों में आपका नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। काशी के दिग्गज विद्वानों की प्रतिक्रिया थी "इसकाल में भी कालीदास और माघकवि की टक्कर लेने वाले विद्वान हैं, यह जानकर प्रसन्नता होती हैं।" इस तरह पूर्ण उदासीनता के साथ, जिनवाणी माँ की अविरत सेवा में आपने गृहस्थाश्रम में ही जीवन के ५० वर्ष पूर्ण किये। जैन सिद्धान्त के हृदय को आत्मसात करने हेतु आपने सिद्धान्त ग्रन्थों श्री धवल, महाधवल जयधवल महाबन्ध आदि ग्रन्थों का विधिवत् स्वाध्याय किया। "ज्ञान भारं क्रिया बिना" क्रिया के बिना ज्ञान भार- स्वरूप है - इस मंत्र को जीवन में उतारने हेतु आप त्याग मार्ग पर प्रवृत्त हुए।

सर्वप्रथम ५२ वर्ष की आयु में सन् १९४७ में आपने अजमेर नगर में ही आचार्य श्री वीर सागरजी महाराज से सप्तम प्रतिमा के व्रत अंगीकार किये। ५४ वर्ष की आयु में आपने पूर्णरूपेण गृहत्याग कर आत्मकल्याण हेतु जैन सिद्धान्त के गहन अध्ययन में लग गये। सन् १९५५ में ६० वर्ष की आयु में आपने आचार्य श्री वीर सागरजी महाराज से ही रेनवाल में क्षुल्लक दीक्षा लेकर ज्ञानभूषण के नाम से विख्यात हुए। सन् १९५७ में ६२ वर्ष की आयु में आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज से खानियाँ (जयपुर) में मुनि दीक्षा अंगीकार कर १०८ मुनि श्री ज्ञानसागरजी के नाम से विभूषित हुए। और आपकों आचार्य श्री का प्रथम शिष्य होने का गौरव प्राप्त हुआ। संघ में आपने उपाध्याय पद के कार्य को पूर्ण विद्वत्ता एवं सजगता के साथ सम्पन्न किया। रूढ़िवाद से कोसों दूर मुनि ज्ञानसागर जी ने मुनिपद की सरलता और गंभीरता को धारण कर मन, वचन और कायसे दिगम्बरत्व की साधना में लग गये। दिन रात आपका समय आगमानुकूल मुनिचर्या की साधना, ध्यान अध्ययन-अध्यापन एवं लेखन में व्यतीत होता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहा । फिर राजस्थान प्रान्त में ही विहार करने निकल गये । उस समय आपके साथ मात्र दो-चार त्यागी व्रती थे, विशेष रूप से ऐलक श्री सन्मतिसागर जी, क्षुल्लक श्री संभवसागर जी व सुख सागरजी तथा एक-दो ब्रह्मचारी थे । मुनि श्री उच्च कोटि के शास्त्र-ज्ञाता, विद्वान एवं तात्विक वक्ता थे । पंथ वाद से दूर रहते हुए आपने सदा जैन सिद्धान्तों को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी और एक सद्‌गृहस्थ का जीवन जीने का आह्वान किया।

विहार करते हुए आप मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर तथा ब्यावर भी गये । ब्यावर में पंडित हीरा लालजी शास्त्री ने मुनि श्री को उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों एवं पुस्तकों को प्रकाशित कराने की बात कही, तब आपने कहा "जैन वाँगमय की रचना करने का काम मेरा है, प्रकाशन आदि का कार्य आप लोगों का है" ।

जब सन् १९६७ में आपका चातुर्मास मदनगंज किशनगढ़ में हो रहा था, तब जयपुर नगर के चूलगिरि क्षेत्र पर आचार्य देश भूषण जी महाराज का वर्षा योग चल रहा था । चूलगिरी का निर्माण कार्य भी आपकी देखरेख एवं संरक्षण में चल रहा था। उसी समय सदलगा ग्रामनिवासी, एक कन्नड़-भाषी नवयुवक आपके पास ज्ञानार्जन हेतु आया । आचार्य देशभूषण जी की आँखों ने शायद उस नवयुवक की भावना को पढ़ लिया था, सो उन्होंने उस नवयुवक विद्याधर को आशीर्वाद प्रदान कर ज्ञानार्जन हेतु मुनिवर ज्ञानसागर जी के पास भेज दिया । जब मुनि श्री ने नौजवान विद्याधर में ज्ञानार्जन की एक तीव्र कसक एवं ललक देखी तो मुनि श्री ने पूछ ही लिया कि अगर विद्यार्जन के पश्चात छोडकर चले जावोगे तो मुनि तो का परिश्रम व्यर्थ जायेगा। नौजवान विद्याधर ने तुरन्त ही दृढ़ता के साथ आजीवन सवारी का त्याग कर दिया । इस त्याग भावना से मुनि ज्ञान सागरजी अत्यधिक प्रभावित हुए और एक टक-टकी लगाकर उस नौजवान की मनोहारी, गौरवर्ण तथा मधुर मुस्कान के पीछे छिपे हुए दृढ़-संकल्प को देखते ही रह गये ।

शिक्षण प्रारम्भ हुआ । योग्य गुरू के योग्य शिष्य विद्याधर ने ज्ञानार्जन में कोई कसर नहीं छोड़ी । इसी बीच उन्होंने अखंड ब्रह्मचर्य्य व्रत को भी धारण कर लिया । ब्रह्मचारी विद्याधर की साधना प्रतिमा, तत्परता तथा ज्ञान के क्षयोपशम को देखकर गुरू ज्ञानसागर जी इतने प्रभावित हुएं कि, उनकी कड़ी परीक्षा लेने के बाद, उन्हें

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनिपद ग्रहण करने की स्वीकृति दे दी। इस कार्य को सम्पन्न करने का सौभाग्य मिला अजमेर नगर को और सम्पूर्ण जैन समाज को। ३० जून १९६८ तदानुसार आषाढ़ शुक्ला पंचमी को ब्रह्मचारी विद्याधर की विशाल जन समुदाय के समक्ष जैनश्वरी दीक्षा प्रदान की गई और विद्याधर, मुनि विद्यासागर के नाम से सुशोभित हुए। उस वर्ष का चातुर्मास अजमेर में ही सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चात मुनि श्री ज्ञानसागर जी का संघ विहार करता हुआ नसीराबाद पहुँचा। यहाँ आपने ७ फरवरी १९६९ तदानुसार मगसरबदी दूज को श्री लक्ष्मी नारायण जी को मुनि दीक्षा प्रदान कर मुनि १०८ श्री विवेकसागर नाम दिया इसी पुनीत अवसर पर समस्त उपस्थित जैन समाज द्वारा आपको आचार्य पद से सुशोभित किया गया।

आचार्य ज्ञानसागर जी की हार्दिक अभिलाषा थी कि उनके शिष्य उनके सान्निध्य में अधिक से अधिक ज्ञार्नाजन कर ले। आचार्य श्री अपने ज्ञान के अथाह सागर को समाहित कर देना चाहते थे विद्या के सागर में और दोनों ही गुरू-शिष्य उतावले थे एक दूसरे में समाहित होकर ज्ञानामृत का निरन्तर पान करने और कराने में। आचार्य ज्ञानसागर जी सच्चे अर्थों में एक विद्वान-जौहरी और पारखी थे तथा बहुत दूर दृष्टि वाले थे। उनकी काया निरन्तर क्षीण होती जा रही थी। गुरू और शिष्य की जैन सिद्धान्त एवं वांगमय की आराधना, पठन, पाठन एवं तत्वचर्चा-परिचर्चा निरन्तर अबाधगति से चल रही थी।

तीन वर्ष पश्चात १९७२ में आपके संघ का चातुर्मास पुनः नसीराबाद में हुआ। अपने आचार्य गुरू की गहन अस्वस्थ्यता में उनके परम सुयोग्य शिष्य मुनि श्री विद्यासागर जी ने पूर्ण निष्ठा और निस्पृह भाव से इतनी सेवा की कि शायद कोई लखपती बाप का बेटा भी इतनी निष्ठा और तत्परता के साथ अपने पिता श्री की सेवा कर पाता। कानों सुनी बात तो एक बार झूंठी हो सकती है लेकिन आँखो देखी बात को तो शत प्रतिशत सत्य मान कर ऐसी उत्कृष्ट गुरू भक्ति के प्रति नतमस्तक होना ही पड़ता है।

चातुर्मास समाप्ति की ओर था। आचार्य श्री ज्ञानसागर जी शारीरिक रुप से काफी अस्वस्थ्य एवं क्षीण हो चुके थे। साइटिका का दर्द कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था दर्द की भयंकर पीड़ा के कारण आचार्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चलने फिरने में असमर्थ होते जा रहे थे। १६-१७ मई १९७२ की बात है - आचार्य श्री ने अपने योग्यतम शिष्य मुनि विद्यासागरं से कहा "विद्यासागर! मेरा अन्त समीप है। मेरी समाधि कैसे सधेगी ?

इसी बीच एक महत्वपूर्ण घटना नसीराबाद प्रवास के समय घटित हो चुकी थी। आचार्य श्री के देह-त्याग से करीब एक माह पूर्व ही दक्षिण प्रान्तीय मुनि श्री पार्श्वसागर जी आचार्य श्री की निर्विकल्प समाधि में सहायक होने हेतु नसीराबाद पधार चुके थे। वे कई दिनों से आचार्य श्री ज्ञानसागरजी की सेवा सुश्रुषा एवं वैय्यावृत्ति कर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहते थे। नियति को कुछ और ही मंजूर था। १५ मई १९७२ को पार्श्वसागर महाराज को शारीरिक व्याधि उत्पन्न हुई और १६ मई को प्रातःकाल करीब ७ बजकर ४५ मिनिट पर अरहन्त, सिद्ध का स्मरण करते हुए वे इस नश्वर देह का त्याग कर स्वर्गारोहण हो गये। अतः अब यह प्रश्न आचार्य ज्ञानसागर जी के सामने उपस्थित हुआ कि समाधि हेतु आचार्य पद का परित्याग तथा किसी अन्य आचार्य की सेवा में जाने का आगम में विधान है। आचार्य श्री के लिए इस भंयकर शारीरिक उत्पीडन की स्थिति में किसी अन्य आचार्य के पास जाकर समाधि लेना भी संभव नहीं था। आचार्य श्री ने अन्ततोगत्वा अपने शिष्य मुनि श्री विद्यासागर जी को कहा "मेरा शरीर आयु कर्म के उदय से रत्नत्रय- आराधना में शनैः शनैः कृश हो रहा है। अतः मैं यह उचित समझता हूँ कि शेष जीवन काल में आचार्य पद का परित्याग कर इस पद पर अपने प्रथम एवं योग्यतम शिष्य को पदासीन कर दूं। मेरा विश्वास है कि आप श्री जिनशासन सम्वर्धन एवं श्रमण संस्कृति का संरक्षण करते हुए इस पदकी गरिमा को बनाये रखोगे तथा संघ का कुशलता पूर्वक संचालन करसमस्त समाज को सही दिशा प्रदान करोगे।" जब मुनि श्री विद्यासागरजी ने इस महान भार को उठाने में, ज्ञान, अनुभव और उम्र से अपनी लघुता प्रकट की तो आचार्य ज्ञान सागरजी ने कहा "तुम मेरी समाधि साध दो, आचार्य पद स्वीकार करलो। फिर भी तुम्हें संकोच है तो गुरु दक्षिणा स्वरुप ही मेरे इस गुरुत्तर भार को धारण कर मेरी निर्विकल्प समाधि करादो- अन्य उपाय मेरे सामने नहीं है।"

मुनि श्री विद्यासागर जी काफी विचलित हो गये, काफी मंथन किया, विचार-विमर्श किया और अन्त में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्णय लिया कि गुरु दक्षिणा तो गुरु को हर हालत में देनी ही होगी । और इस तरह उन्होंने अपनी मौन स्वीकृति गुरु .चरणों से समर्पित कर दी ।

अपनी विशेष आभा के साथ २२ नवम्बर १९७२ तदानुसार मगसर बदी दूज का सूर्योदय हुआ। आज जिन शासन के अनुयायिओं को साक्षात् एक अनुपम एवं अद्भुत दृश्य देखने को मिला । कल तक जो श्री ज्ञान सागरजी महाराज संघ के गुरु थे, आचार्य थे, सर्वोपरि थे, आज वे ही साधु एवं मानव धर्म की पराकाष्ठा का एक उत्कृष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करने जा रहे थे. यह एक विस्मयकारी एवं रोमांचक दृश्य था, मुनि की संज्वलन कषाय की मन्दता का सर्वोत्कृष्ठ उदाहरण था । आगमानुसार आचार्य श्री ज्ञानसागरजी ने आचार्य पदत्याग की घोषणा की तथा अपने सर्वोत्तम योग्य शिष्य मुनि श्री विद्यासागरजी को समाज के समक्ष अपना गुरुत्तर भार एवं आचार्य पद देने की स्वीकृति मांगकर, उन्हें आचार्य पद से विभूषित किया । जिस बडे पट्टे पर आज तक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी आसीन होते थे उससे वे नीचे उतर आये और मुनि श्री विद्यासागरजी, को उस आसन पर पदासीन किया। जन-समुदाय की आँखे सुखानन्द के आँसुओं से तरल हो गई । जय घोष से आकाश और मंदिर का प्रागंण गूंज उठा। आचार्य श्री विद्यासागर जी ने अपने गुरु के आदेश का पालन करते हुये पूज्य गुरुवर की निर्विकल्प समाधि के लिए आगमानुसार व्यवस्था की। गुरु ज्ञानसागरजी महाराज भी परम शान्त भाव से अपने शरीर के प्रति निर्ममत्व होकर रस त्याग की ओर अग्रसर होते गये।

आचार्य श्री विद्यासागरजी ने अपने गुरु की संलेखना पूर्वक समाधि कराने में कोई कसर नहीं छोडी । रात दिन जागकर एवं समयानुकूल सम्बोधन करते हुए आचार्य श्री ने मुनिवर की शांतिपूर्वक समाधि कराई । अन्त में समस्त आहार एवं जल का त्यागोपरान्त मिती जेष्ठ कृष्णा अमावस्या वि. स. २०३० तदनानुसार शुक्रवार दिनांक १ जून १९७३ को दिन में १० बजकर ५० मिनिट पर गुरु ज्ञानसागर जी इस नश्वर शरीर का त्याग कर आत्मलीन हो गये । और दे गये समस्त समाज को एक ऐसा सन्देश कि अगर सुख,शांति और निर्विकल्प समाधि चाहते हो तो कषायों का शमन कर रत्नत्रय मार्ग पर आढू हो जाओ, तभी कल्याण संभव है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री चलने फिरने में असमर्थ होते जा रहे थे। १६-१७ मई १९७२ की बात है - आचार्य श्री ने अपने योग्यतम शिष्य मुनि विद्यासागर से कहा ''विद्यासागर! मेरा अन्त समीप है। मेरी समाधि कैसे सधेगी ?

इसी बीच एक महत्वपूर्ण घटना नसीराबाद प्रवास के समय घटित हो चुकी थी। आचार्य श्री के देह-त्याग से करीब एक माह पूर्व ही दक्षिण प्रान्तीय मुनि श्री पार्श्वसागर जी आचार्य श्री की निर्विकल्प समाधि में सहायक होने हेतु नसीराबाद पधार चुके थे। वे कई दिनों से आचार्य श्री ज्ञानसागरजी की सेवा सुश्रुषा एवं वैय्यावृत्ति कर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहते थे। नियति को कुछ और ही मंजूर था। १५ मई १९७२ को पार्श्वसागर महाराज को शारीरिक व्याधि उत्पन्न हुई और १६ मई को प्रातःकाल करीब ७ बजकर ४५ मिनिट पर अरहन्त, सिद्ध का स्मरण करते हुए वे इस नश्वर देह का त्याग कर स्वर्गारोहण हो गये। अतः अब यह प्रश्न आचार्य ज्ञानसागर जी के सामने उपस्थित हुआ कि समाधि हेतु आचार्य पद का परित्याग तथा किसी अन्य आचार्य की सेवा में जाने का आगम में विधान है। आचार्य श्री के लिए इस भंयकर शारीरिक उत्पीडन की स्थिति में किसी अन्य आचार्य के पास जाकर समाधि लेना भी संभव नहीं था। आचार्य श्री ने अन्ततोगत्वा अपने शिष्य मुनि श्री विद्यासागर जी को कहा ''मेरा शरीर आयु कर्म के उदय से रत्नत्रय- आराधना में शनैः शनैः कृश हो रहा है। अतः मैं यह उचित समझता हूँ कि शेष जीवन काल में आचार्य पद का परित्याग कर इस पद पर अपने प्रथम एवं योग्यतम शिष्य को पदासीन कर दूं। मेरा विश्वास है कि आप श्री जिनशासन सम्वर्धन एवं श्रमण संस्कृति का संरक्षण करते हुए इस पदकी गरिमा को बनाये रखोगे तथा संघ का कुशलता पूर्वक संचालन करसमस्त समाज को सही दिशा प्रदान करोगे।'' जब मुनि श्री विद्यासागरजी ने इस महान भार को उठाने में, ज्ञान, अनुभव और उम्र से अपनी लघुता प्रकट की तो आचार्य ज्ञान सागरजी ने कहा ''तुम मेरी समाधि साध दो, आचार्य पद स्वीकार करलो। फिर भी तुम्हें संकोच है तो गुरु दक्षिणा स्वरुप ही मेरे इस गुरुत्तर भार को धारण कर मेरी निर्विकल्प समाधि करादो- अन्य उपाय मेरे सामने नहीं है।''

मुनि श्री विद्यासागर जी काफी विचलित हो गये, काफी मंथन किया, विचार-विमर्श किया और अन्त में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्णय लिया कि गुरु दक्षिणा तो गुरु को हर हालत में देनी ही होगी । और इस तरह उन्होंने अपनी मौन स्वीकृति गुरु चरणों से समर्पित कर दी ।

अपनी विशेष आभा के साथ २२ नवम्बर १९७२ तदानुसार मगसर बदी दूज का सूर्योदय हुआ। आज जिन शासन के अनुयायिओं को साक्षात् एक अनुपम एवं अद्‌भुत द्दश्य देखने को मिला । कल तक जो श्री ज्ञान सागरजी महाराज संघ के गुरु थे, आचार्य थे, सर्वोपरि थे, आज वे ही साधु एवं मानव धर्म की पराकाष्ठा का एक उत्कृष्ठ उदाहरण प्रस्तुत करने जा रहे थे. यह एक विस्मयकारी एवं रोमांचक द्दश्य था, मुनि की संज्वलन कषाय की मन्दता का सर्वोत्कृष्ठ उदाहरण था । आगमानुसार आचार्य श्री ज्ञानसागरजी ने आचार्य पदत्याग की घोषणा की तथा अपने सर्वोत्तम योग्य शिष्य मुनि श्री विद्यासागरजी को समाज के समक्ष अपना गुरुत्तर भार एवं आचार्य पद देने की स्वीकृति मांगकर, उन्हें आचार्य पद से विभूषित किया । जिस बडे पट्टे पर आज तक आचार्य श्री ज्ञानसागर जी आसीन होते थे उससे वे नीचे उतर आये और मुनि श्री विद्यासागरजी, को उस आसन पर पदासीन किया। जन-समुदाय की आँखे सुखानन्द के आँसुओं से तरल हो गई । जय घोष से आकाश और मंदिर का प्रागंण गूंज उठा। आचार्य श्री विद्यासागर जी ने अपने गुरु के आदेश का पालन करते हुये पूज्य गुरुवर की निर्विकल्प समाधि के लिए आगमानुसार व्यवस्था की। गुरु ज्ञानसागरजी महाराज भी परम शान्त भाव से अपने शरीर के प्रति निर्ममत्व होकर रस त्याग की ओर अग्रसर होते गये।

आचार्य श्री विद्यासागरजी ने अपने गुरु की संलेखना पूर्वक समाधि कराने में कोई कसर नहीं छोडी । रात दिन जागकर एवं समयानुकूल सम्बोधन करते हुए आचार्य श्री ने मुनिवर की शांतिपूर्वक समाधि कराई । अन्त में समस्त आहार एवं जल का त्यागोपरान्त मिती जेष्ठ कृष्णा अमावस्या वि. स. २०३० तदनानुसार शुक्रवार दिनांक १ जून १९७३ को दिन में १० बजकर ५० मिनिट पर गुरु ज्ञानसागर जी इस नश्वर शरीर का त्याग कर आत्मलीन हो गये । और दे गये समस्त समाज को एक ऐसा सन्देश कि अगर सुख,शांति और निर्विकल्प समाधि चाहते हो तो कषायों का शमन कर रत्नत्रय मार्ग पर आढ्ढ हो जाओ, तभी कल्याण संभव है ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस प्रकार हम कह सकते है कि आचार्य ज्ञानसागरजी का विशाल कृत्तित्व और व्यक्तित्व इस भारत भूमि के लिए सरस्वती के वरद पुत्रता की उपलब्धि कराती है। इनके इस महान साहित्य सृजनता से अनेकानेक ज्ञान पिपासुओं ने इनके महाकाव्यों परशोध कर डाक्टर की उपाधि प्राप्त कर अपने आपको गौरवान्वित किया है। आचार्य श्री के साहित्य की सुरभि वर्तमान में सारे भारत में इस तरह फैल कर विद्वानों को आकर्षित करने लगी है कि समस्त भारतवर्षीय जैन अजैन विद्वानों का ध्यान उनके महाकाव्यों की ओर गया है। परिणामत: आचार्य श्री ज्ञानसागरजी की ही संघ परम्परा के प्रथम आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के परम सुयोग्य शिष्य, प्रखर प्रवचन प्रवक्ता, मुनि श्री १०८ श्री सुधासागर जी महाराज के सान्निध्य में प्रथम बार "आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज के कृत्तित्व एवं व्यक्तित्व पर ९-१०-११ जून १९९४ को महान अतिशय एवं चमत्कारिक क्षेत्र, सांगानेर (जयपुर) में संगोष्ठी आयोजित करके आचार्य ज्ञानसागरजी के कृत्तित्व को सरस्वती की महानतम साधना के रूप में अंकित किया था, उसे अखिल भारतवर्षीय विद्वत्त समाज के समक्ष उजागर कर विद्वानों ने भारतवर्ष के सरस्वती पुत्र का अभिनन्दन किया है। इस संगोष्ठी में आचार्य श्री के साहित्य-मंथन से जो नवनीत प्राप्त हुवा, उस नवनीत की स्निगधता से सम्पूर्ण विद्वत्त मण्डल इतना आनन्दित हुआ कि पूज्य मुनि श्री सुधासागरजी के सामने अपनी अतरंग भावना व्यक्त की, कि- पूज्य ज्ञानसागरजी महाराज के एक एक महाकाव्य पर एक एक संगोष्ठी होना चाहिए, क्योंकि एक एक काव्य में इतने रहस्मय विषय भरे हुए हैं कि उनके समस्त साहित्य पर एक संगोष्ठी करके भी उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। विद्वानों की यह भावना तथा साथ में पूज्य मुनि श्री सुधासागर जी महाराज के दिल में पहले से ही गुरु नाम गुरु के प्रति,स्वभावत: कृतित्व और व्यक्तित्व के प्रति प्रभावना बैठी हुई थी, परिणामस्वरुप सहर्ष ही विद्वानों और मुनि श्री के बीच परामर्श एवं विचार विमर्श हुआ और यह निर्णय हुआ कि आचार्य श्री ज्ञानसागरजी के पृथक पृथक महाकाव्य पर पृथक पृथक रुप से अखिल भारतवर्षीय संगोष्ठी आयोजित की जावे । उसी समय विद्वानों ने मुनि श्री सुधासागर जी के सान्निध्य मे बैठकर यह भी निर्णय लिया कि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी महाराज का समस्त साहित्य पुन: प्रकाशित कराकर विद्वानों को, पुस्तकालयों और विभिन्न स्थानों के मंदिरों को उपलब्ध कराया जावे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साथ में यह भी निर्णय लिया गया कि द्वितीय संगोष्ठी में वीरोदय महाकाव्य को विषय बनाया जावे। इस महाकाव्य में से लगभग ५० विषय पृथक पृथक रुप से छाँटे गये, जो पृथक पृथक मूर्धन्य विद्वानों के लिए आलेखित करने हेतु प्रेषित किये गये है। आशा है कि निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मुनि श्री के ही सान्निध्य में द्वितीय अखिल भारतवर्षीय विद्वत्त संगोष्ठी वीरोदय महाकाव्य पर माह अक्टूबर ९४ मे अजमेर में सम्पन्न होने जा रही है जिसमें पूज्य मुनि श्री का संरक्षण, नेतृत्व एवं मार्गदर्शन सभी विद्वानों को निश्चित रुप से मिलेगा।

हमारे अजमेर समाज का भी परम सौभाग्य है कि यह नगर आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज की साधना स्थली एवं उनके परम सुयोग्य शिष्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज की दीक्षा स्थली रही है। अजमेर के सातिशय पुण्य के उदय के कारण हमारे आराध्य पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज ने अपने परम सुयोग्य शिष्य, प्रखर प्रवक्ता, तीर्थोद्धारक, युवा मनिषी, पूज्य मुनि श्री सुधासागरजी महाराज, पूज्य क्षुल्लक १०५ श्री गंभीर सागरजी एवं पूज्य क्षुल्लक १०५ श्री धैर्य सागर जी महाराज को, हम लोगों की भक्ति भावना एवं उत्साह को देखते हुए इस संघ को अजमेर चातुर्मास करने की आज्ञा प्रदान कर हम सबको उपकृत किया है।

परम पूज्य मुनिराज श्री सुधासागरजी महाराज का प्रवास अजमेर समाज के लिए एक वरदान सिद्ध हो रहा है। आजतक के पिछले तीस वर्षों के इतिहास में धर्मप्रेमी सज्जनों व महिलाओं का इतना जमघट, इतना समुदाय देखने को नहीं मिला जो एक मुनि श्री के प्रवचनों को सुनने के लिए समय से पूर्व ही आकर अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं। सोनी जी की नसियाँ मे प्रवचन सुनने वाले जैन-अजैन समुदाय की इतनी भीड़ आती हैं कि तीन-तीन चार-चार स्थानों पर "क्लोज-सर्किट टी.वी." लगाने पड़ रहे हैं। श्रावक संस्कार शिविर जो पर्यूषण पर्व में आयोजित होने जा रहा है। अपने आपकी एक एतिहासिक विशिष्ठता है। अजमेर समाज के लिए यह प्रथम सौभाग्यशाली एवं सुनहरा अवसर होगा जब यहाँ के बाल-आबाल अपने आपको आगमानुसार संस्कारित करेंगे।

महाराज श्री के व्यक्तित्व का एवं प्रभावपूर्ण उद्‌बोधन का इतना प्रभाव पड़ रहा है कि दान दातार और धर्मप्रेमी निष्ठावान व्यक्ति आगे बढ़कर महाराज श्री के सानिध्य में होने वाले कार्यक्रमों को मूर्त रुप देना चाहते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं । अक्टूबर माह के मध्य अखिल भारतवर्षीय विद्वत-संगोष्ठी का आयोजन भी एक विशिष्ठ कार्यक्रम है जिसमें पूज्य आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज के द्वारा रचित वीरोदय महाकाव्य के विभिन्न विषयों पर ख्याति प्राप्त विद्वान अपने आलेख का वाचन करेंगे। काश यदि पूज्य मुनिवर सुधासागरजी महाराज का संसघ यहाँ अजमेर में पर्दापण न हुआ होता तो हमारा दुर्भाग्य किस सीमा तक होता, विचारणीय है ।

पूज्य मुनिश्री के प्रवचनों का हमारे दिल और दिमाग पर इतना प्रभाव हुआ कि सम्पूर्ण दिगम्बर समाज अपने वर्ग विशेष के भेदभावों को भुलाकर जैन शासन के एक झंडे के नीचे आ गये । यहीं नहीं हमारी दिगम्बर जैन समिति ने समाज की ओर से पूज्य आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज के समस्त साहित्य का पुनः प्रकाशन कराने का संकल्प मुनिश्री के सामने व्यक्त किया । मुनि श्री का आशीर्वाद मिलते ही समाज के दानवीर लोग एक एक पुस्तक को व्यक्तिगत धनराशि से प्रकाशित कराने के लिए आगे आये ताकि वे अपने राजस्थान में ही जन्मे सरस्वती-पुत्र एवं अपने परमेष्ठी के प्रति पूजांजली व्यक्त कर अपने जीवन में सातिशय पुण्य प्राप्त कर तथा देव, शास्त्र, गुरु के प्रति अपनी आस्था को बलवती कर अपना अपना आत्म कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर सके।

इस प्रकार आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज के साहित्य की आपूर्ति की समस्या की पूर्ती इस चातुर्मास में अजमेर समाज ने सम्पन्न की है उसके पीछे एक ही भावना है कि अखिल भारतवर्षीय जन मानस एवं विद्वत जन इस साहित्य का अध्ययन, अध्यापन कर सृष्टी की तात्विक गवेषणा एवं साहित्यक छटा से अपने जीवन को सुरभित करते हुए कृत कृत्य कर सकेंगे।

इसी चातुर्मास के मध्य अनेकानेक सामाजिक एवं धार्मिक उत्सव भी आयेगें जिस पर समाज को पूज्य मुनि श्री से सारगर्भित प्रवचन सुनने का मौका मिलेगा । आशा है इस वर्ष का भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव एवं पिच्छिका परिवर्तन कार्यक्रम अपने आप में अनूठा होगा । जो शायद पूर्व की कितनी ही परम्पराओं से हटकर होगा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अन्त में श्रमण संस्कृति के महान साधक महान तपस्वी, ज्ञानमूर्ति, चारित्र विभूषण, बाल ब्रह्मचारी परम पूज्य आचार्य श्री १०८ श्री ज्ञानसागर जी महाराज के पुनीत चरणों में तथा उनके परम सुयोग्यतम शिष्य चारित्र चक्रवर्ती पूज्य आचार्य श्री १०८ श्री विद्यासागर जी महाराज और इसी कड़ी में पूज्य मुनि श्री १०८ श्री सुधासागर जी महाराज, क्षुल्लकगण श्री गम्भीर सागर जी एवं श्री धैर्य सागरजी महाराज के पुनीत चरणों में नत मस्तक होता हुआ शत्-शत् वंदन, शत्-शत् अभिनंदन करता हुआ अपनी विनीत विनयांजली समर्पित करता हूँ ।

इन उपरोक्त भावनाओं के साथ प्राणी मात्र के लिए तत्वगवेषणा हेतु यह ग्रन्थ समाज के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं । यह **श्री शांतिनाथ पूजा विधान** पुस्तक श्री वाणीभूषण बा. ब्र. पं. भूरामल जी शास्त्री ने सम्पादित थी, यही ब्र. बाद में आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज के नाम से जगत विख्यात हुए ।

इस ग्रन्थ का प्रथम संस्करण श्रीमान् सेठ केसरीचन्दजी निहालचन्दजी अग्रवाल से प्रकाशित हुआ था । उसी प्रकाशन को पुनः यथावत प्रकाशित करके इस ग्रन्थ की आपूर्ती की पूर्ती की जा रही है । अतः पूर्व प्रकाशक का दिगम्बर जैन समाज, अजमेर आभार व्यक्त करती है। एवं इस द्वितीय संस्करण में दातारों का एवं प्रत्यक्ष एवं परोक्ष से जिन महानुभावों ने सहयोग दिया है, उनका भी आभार मानते हैं ।

इस ग्रन्थ की महिमा प्रथम संस्करण से प्रकाशकीय एवं प्रस्तावना में अतिरिक्त है । जो इस प्रकाशन में भी यथावत संलग्न हैं ।

दिनाङ्क : 13-14-15 अक्टूबर 1994
वीरोदय महाकाव्य पर अ. भा. विद्वत संगोष्ठी

विनीत

श्री दिगम्बर जैन समिति एवं सकल दिगम्बर जैन समाज अजमेर (राज)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परम पूज्य

आचार्य 108 श्री ज्ञानसागरजी महाराज

सांख्यिकी – परिचय

प्रस्तुति - कमल कुमार जैन

पारिवारिक परिचय :

जन्म स्थान - राणोली ग्राम (जिला सीकर) राजस्थान
जन्म काल - सन् १८९१
पिता का नाम - श्री चतुर्भुज जी;
माता का नाम - श्रीमती घृतवरी देवी
गोत्र - छाबड़ा (खंडेलवाल जैन)
बाल्यकाल का नाम - भूरामल जी
भ्रात परिचय - पाँच भाई (छगनलाल/भूरामल/गंगाप्रसाद/गौरीलाल/एवं देवीदत्त)
पिता की मृत्यु - सन १९०२ में
शिक्षा - प्रारम्भिक शिक्षा गांव के विद्यालय में एवं शास्त्रि स्तर की शिक्षा स्याद्वाद महाविद्यालय बनारस (उ.प्र.) से प्राप्त की ।

साहित्यिक परिचय :

संस्कृत भाषा में
✻ दयोदय / जयोदय / वीरोदय / (महाकाव्य)
✻ सुदर्शनोदय / भद्रोदय / मुनि मनोरंजनाशीति – (चरित्र काव्य)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* सम्यकत्व सार शतक (जैन सिद्धान्त)
* प्रवचन सार प्रतिरुपक (धर्म शास्त्र)

हिन्दी भाषा में

* ऋषभावतार / भाग्योदय / विवेकोदय / गुण सुन्दर वृत्तान्त (चरित्र काव्य)
* कर्त्तव्य पथ प्रदर्शन / सचित्तविवेचन / तत्वार्थसूत्र टीका / मानव धर्म (धर्मशास्त्र)
* देवागम स्तोत्र / नियमसार / अष्टपाहुड़ (पद्यानुवाद)
* स्वामी कुन्दकुन्द और सनातन जैन धर्म और जैन विवाह विधि

चारित्र पथ परिचय :

* सन १९४७ (वि. सं. २००४) में व्रतरुप से ब्रह्मचर्य प्रतिमा धारण की ।
* सन १९५५ (वि. सं. २०१२) में क्षुल्लक दीक्षा धारण की ।
* सन १९५७ (वि. सं. २०१४) में ऐलक दीक्षा धारण की ।
* सन १९५९ (वि. सं. २०१६) में आचार्य १०८ श्री शिवसागर महाराज से उनके प्रथम शिष्य के रुप में मुनि दीक्षा धारण की । स्थान खानिया (जयपुर) राज । आपका नाम मुनि ज्ञानसागर रखा गया ।
* ३० जून सन् १९६८ (आषाड़ शुक्ला ५ सं. २०२५) को ब्रह्मचारी विद्याधर जी को मुनि पद की दीक्षा दी जो वर्तमान में आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर जो कि रुप में विराजित है ।
* ७ फरवरी सन् १९६९ (फागुन वदी ५ सं. २०२५) को नसीराबाद (राजस्थान) में जैन समाज ने आपको आचार्य पद से अलंकृत किया एवं इस तिथि को विवेकसागर जी को मुनिपद की दीक्षा दी ।
* संवत् २०२६ को ब्रह्मचारी जमनालाल श्री गंगवाल खाचरियावास (जिला-सीकर) रा. को क्षुल्लक दीक्षा दी और क्षुल्लक विनयसागर नाम रखा । बाद में क्षुल्लक विनयसागर जी ने मुनिश्री विवेकसागर जी से मुनि दीक्षा ली और मुनि विनयसागर कहलाये ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

※ संवत् २०२६ मह्यं ब्रह्म. पन्नालाल जी को केशरगंज अजमेर (राज.) में मुनि दीक्षा पूर्वक समाधि दी ।

※ संवत् २०२६ में बनवारी लाल जी मुनि दीक्षा पूर्वक समाधि दी।

※ २० अक्टूबर १९७२ को नसीराबाद में ब्रह्म. स्वरुपानन्दजी को क्षुल्लक दीक्षा दी, जो कि आचार्य श्री ज्ञानसागर जी के समाधिस्थ पश्चात् सन् १९७६ (कुण्डलपुर) तक आचार्य विद्यासागर महाराज के संघ में रहे ।

※ २० अक्टूबर १९७२ को नसीराबाद जैन समाज ने आपको चारित्र चक्रवर्ती पद से अलंकृत किया ।

※ क्षुल्लक आदिसागर जी, क्षुल्लक शीतलसागर जी (आचार्य महावीर कीर्ति जी के शिष्य भी आपके साथ रहते थे ।

※ पांडित्य पूर्ण, जिन आगम के अतिश्रेष्ठ ज्ञाता आचार्य श्री ज्ञानसागरजी महाराज ने अपने जीवन काल में अनेकों श्रमण/आर्यिकाएँ/ऐलक/क्षुल्लक/ब्रह्मचारी/श्रावकों को जैन आगम के दर्शन का ज्ञान दिया। आचार्य श्री वीर सागर जी/आचार्य श्री शिवसागर जी/आचार्य श्री धर्मसागर जी/आचार्य श्री अजित सागर जी / एवं वर्तमान श्रेष्ठ आचार्य विद्यासागर जी इसके अनुपम उदाहरण है ।

आचार्य श्री के चातुर्मास परिचय :

※ संवत् २०१६ - अजमेर सं. २०१७ - लाडनू; सं. २०१८ - सीकर (तीनों चातुर्मास आचार्य शिवसागर जी के साथ किये)

※ संवत २०१९ - सीकर; २०२० - हिंगोनिया (फुलेरा); सं. २०२१- मदनगंज - किशनगंढ़ सं. २०२२ - अजमेर; सं. २०२३ - अजमेर, सं. २०२४ - मदनगंज-किशनगढ़ सं. २०२५ - अजमेर (सोनी जी की नसियाँ); सं. २०२६ - अजमेर (केसरगंज); सं. २०२७- किशनगढ़ रैनवाल; सं. २०२८ - मदनगंज-किशनगढ़ सं. २०२९- नसीराबाद ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिहार स्थल परिचय :

❋ सं. २०१२ से सं. २०१६ तक क्षुल्लक/ ऐलक अवस्था में - रोहतक/हासी/हिसार/गुडगाँवा/रिवाड़ी/एवं जयपुर।

❋ सं. २०१६ से सं. २०२९ तक मुनि/आचार्य अवस्था में - अजमेर/लाडनू/सीकर/हिंगोनिया/फुलेरा/मदनगंज-किशनगढ़/नसीराबाद/बीर/रुपनगढ़/मरवा/छोटा नरेना/साली/साकून/हरसोली/छप्या/दूदू/मोजमाबाद/चोरु/झाग/सांवरदा/खंडेला/हयोढ़ी/कोठी/मंडा-भीमसींह/भींडा/किशनगढ़-रैनवाल/कांस/श्यामगढ़/मारोठ/सुरेरा/दांता/कुली/खाचरियाबाद एवं नसीराबाद ।

अंतिम परिचय :

❋ आचार्य पद त्याग एवं संल्लेखना व्रत ग्रहण :
मंगसर वदी २ सं. २०२९
(२२ नवम्बर सन् १९७२)

❋ समाधिस्थ :
ज्येष्ठ कृष्ण अमावस्या सं. २०३०
(शुक्रवार १ जून सन् १९७३)

❋ समाधिस्थ समय: पूर्वान्ह १० बजकर ५० मिनिट ।

❋ सल्लेखना अवधि : मास १३ दिन (मिति अनुसार)
६ मास १० दिन (दिनांक अनुसार)

दर्शन-ज्ञान-चारित्र के अतिश्रेष्ठ अनुयायी के चरणों में श्रद्धेव नमन् । शत् शत् नमन ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

* श्री शांतिनाथ पूजा विधानम् *

* बड़ी शांतिधारा *

(नागौर भण्डार से प्राप्त)

गंधोदक स्नपन समये इमे शांतिमंत्राः पठ्यन्ते ।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं र्हं वं हं मं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं झ्वीं झ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोर्हते भगवते श्रीमते ॐ ह्रीं क्रों ह्रैं मम पापं कडु कडु दह दह हन हन पच पच पाचय पाचय ह्रं झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः पः हः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षों क्षौं क्षं ः क्षीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय, नमोर्हते भगवते श्रीमते ठ ठ ठ मम श्रीरस्तु सिद्धिरस्तु तुष्टिरस्तु पुष्टिरस्तु शांतिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ निखिल भुवन भवन मंगलभृतजिनपति स्नपन समय संप्राप्तावसरमभिनव-कर्पूर कालागुरु कुंकुम हरिचंदनाद्यनेक सुगंधि बंधुर गंध द्रव्य संभार संबंध बंधुर-मखिलदिगन्तराल व्याप्त सौरभातिशय समाकृष्ट समदसामज कपोल तल विगलित मदं मुदित मधुकरनिकरमर्हत्परमेश्वरपवित्रतरगात्रस्पर्शनमात्रपवित्रमयीदं गंधोदक-धारावर्षमशेषहर्षनिबंधनं शान्ति करोतु, कांतिमाविष्करोतु कल्याणं प्रादुःकरोतु सौभाग्यं संतनोतु, आरोग्यं तनोतु संपदः संपादयतु, विपदमपमादयतु, यशोविकाश-यतु, मनः प्रसादयतु, आयुर्दीर्घयतु, श्रियं श्लाघयतु, शुद्धिं विशुद्धयतु, बुद्धिं वर्द्धयतु, श्रेयः पुष्णातु, प्रत्यवायं मुष्णातु, अनभिमतं निवारयतु, मनोरथं परिपूरयतु। परमोत्सवकारणमिदं परममंगलमिदं परमपावनमिदं स्वस्त्यस्तु वः स्वस्त्यस्तु नः क्ष्वी क्ष्वीं हं सः असिआउसा सर्वशांतिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ नमोर्हते भगवते श्रीमते त्रैलोक्यनाथाय घातिकर्मविनाशनाय अष्टमहाप्राति-हार्यसहिताय चतुस्त्रिंशदतिशयसमेताय अनन्तदर्शनज्ञानवीर्यसुखात्मकाय अष्टादशदोष-रहिताय पंचमहाकल्याण संपूर्णाय नवकेवल लब्धि समन्विताय दशविशेषणसंयुक्ताय देवाधिदेवाय धर्मचक्राधीश्वराय धर्मोपदेशनकराय चमर वैरोचनाच्युतेन्द्रप्रभृतींद्रशतेन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरु शिखरशेखरीभूत पांडुकशिलातले गंधोदकपरिपूरितानेकविचित्र मणिमय मंगल कलशैरभिषिक्तमिदानीमर्हं त्रिलोकेश्वरमर्हत्परमेष्ठिनमभिषेचयामि । हँ झं झ्वीं क्ष्वीं हं सः द्रां द्रीं अर्हन् ह्रीं क्लीं ब्लूं द्रावय द्रावय स्वाहा । ॐ शीतोदक प्रदानेन शीतलो भगवान्प्रसीदतु शीता आपः पांतु शिवं मांगल्यन्तु श्रीमदस्तु वः ॐ गंधोदक-प्रदानेन अभिनंदनो भगवान्प्रसीदतु गन्धाः पांतु शिवं मांगल्यन्तु वः । ॐ अक्षतो-दकप्रदानेन अनंतो भगवान्प्रसीदतु अक्षताः पांतु शिवं मांगल्यन्तु श्रीमदस्तु वः । ॐ पुष्पोदक प्रदानेन पुष्पदन्तो भगवान्प्रसीदतु पुष्पाणि पांतु शिवं मांगल्यंतु श्रीमद-स्तु वः । ॐ नैवेद्य प्रदानेन नेमिर्भगवान्प्रसीदतु पीयूषपिंडाः पांतु शिवं मांगल्यन्तु श्रीमदस्तु वः । ॐ प्रदीपप्रदाने चन्द्रप्रभो भगवान्प्रसीदतु कर्पूर मणिमय दीपाः पांतु शिवं मांगल्यन्तु श्रीमदस्तु वः । धूपप्रदानेन धर्म्मनाथो भगवान् प्रसीदतु गुग्गुलादि दशांगधूपाः पांतु शिवं मांगल्यन्तु श्रीमदस्तु वः । ॐ फलप्रदानेन पार्श्वनाथो भगवान् प्रसीदतु, क्रमुक नारंगप्रभृतिफलानि पांतु शिवं मांगल्यन्तु श्रीमदस्तु वः । ॐ अर्हन्तः पांतु वः, सद्धर्म श्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु वः । ओं सिद्धाः पांतु वः हृदयं निर्वाणं प्रयच्छंतु वः, ॐ आचार्य्याः पांतु वः, शीतल सौगंधमस्तु वः, ॐ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपाध्यायाः पातु वः, सौमनस्यं चास्तु वः, ॐ साधवः पातु वः, अन्नदानतपोवीर्य-विज्ञानमस्तु वः।

ॐ वृषभनाथस्वामिनः श्री पादपद्मप्रसादात् अष्टविध कर्मविनाशनं चास्तु वः, ओं अजितस्वामिनः श्री पादपद्मप्रसादादविजयं प्रयच्छतु वः। ॐ संभवनाथ स्वामिनः पादपद्म प्रसादादनेकगुणगणाश्चास्तु वः, ॐ अभिनंदनस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादाद-भिमतफलं प्रयच्छतु वः। ॐ सुमति स्वामिनः श्री पादपद्मप्रसादादमृतं पवित्रं प्रय-च्छतु वः। ॐ श्री पद्मप्रभस्वामी दयां प्रयच्छतु वः। ॐ सुपार्श्व स्वामिनः श्री पादपद्मप्रसादात् कर्मक्षयश्चास्तु वः। ॐ श्री चंद्रप्रभ स्वामिनः श्री पादपद्मप्रसादात् चंद्रार्कतेजोस्तु वः। ॐ श्री पुष्पदंत स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् पुष्पसायकाति-शयोस्तु वः। ॐ शीतल स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् अशुभ कर्ममलप्रक्षालनमस्तु वः। ॐ श्रेयोजिनः श्रेयस्करोस्तु वः। ॐ श्री वासुपूज्य स्वामी रत्नत्रयावासंकरो-ऽस्तु वः। ॐ विमलस्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् सद्धर्म बुद्धिर्वै मांगल्यं चास्तु वः। ॐ अनन्तनाथस्वामिनः श्री पादपद्मप्रसादादनेकधनधान्याभिवृद्धिरक्षणमस्तु वः।

ॐ श्रीधर्मनाथ स्वामिनः श्रीपादपद्मप्रसादात् शर्मप्रचयोऽस्तु वः। ॐ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीमदर्हत्परमेश्वरसर्वज्ञ परमेष्ठिशान्तिनाथस्वामी शान्तिकरोस्तु वः। ॐ कुन्थु स्वामी तंत्राभिवृद्धिकरोस्तु वः। ॐ अरस्वामिनः श्री पादपद्मप्रसादात् परम कल्याण परंपरास्तु वः। ॐ श्री मल्लिनाथ स्वामी शल्यविमोचनकरोस्तु वः। ॐ श्री मुनि-सुव्रत स्वामिनः श्री पादपद्मप्रसादात् सम्यग्दर्शनं चास्तु वः। ॐ श्री नमि भट्टारक स्वामी सम्यग्ज्ञानं प्रयच्छतु वः। ॐ श्री अरिष्टनेमिर्भगवानक्षतं चारित्रं ददातु वः। ॐ श्री मत्पार्श्वभट्टारक श्री पादपद्मप्रसादात् सर्व विघ्नविनाशनमस्तु वः। ॐ श्री वर्द्धमान स्वामिनः श्री पादपद्म प्रसादात् सम्यग्दर्शनाद्यष्ट गुण विशिष्टतास्तु वः। ओं वृषभादयो महावीरवर्द्धमानपर्यन्ताश्चतुर्विंशतिरीर्थंकराः अर्हंतो भगवन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनः सकलवीर्याः वीतरागद्वेषमोहास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकप्रद्योतन-कराः जाति जरामरण रोग प्रमुक्ताः भव्यजनहृत्–कमल संबोधनकराः, अनेक गुण-गणालंकृत दिव्यदेहधराः पंचमहाकल्याणाष्टमहाप्रातिहार्य–चतुस्त्रिंशदतिशय विशेष संप्राप्ताः सुरासुरोरगेन्द्र मुकुटतटघटित मणिगणकिरणराग रंजित चारुचरणारविंदद्वन्द्वाः नृपतिशत सहस्रालंकृत सार्व भौम राजाधिराज परमेश्वर सकल चक्रवर्तिबलदेवमंडलीक महामंडलीक महामात्य सेनानाथ श्रेष्ठिपुरोहितादि शिरस्करांजलिनमित करतल कमल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुकुलालंकृत पादपद्म युगलाः विद्याधरराजाकिरीट कोटि रुचिर रोचिर्घृष्ट चंचच्चरण कमलाः कुलिशनाल रजतमृणाल मंदारकर्णिकारातिकुल शिखरि शेखर गगन गमन मंदाकिनी महाहृद् नदीनदशत सहस्र कमलवासिन्यादि सर्वाभरण भूषितांग सकल सुरसुन्दरीवृन्द वंदित चारुचरणयुगलकमलाः देवाधिदेवाः सशिष्यप्रतिशिष्यानुवर्गाः प्रसीदतु वः। ॐ परमनिर्वाणमार्गप्राप्ताः परममंगल (नामधेयाः) सद्धर्मसर्व-कार्येष्वैहिकामुत्रके च सिद्धाः सिद्धिं प्रयच्छंतु वः।

ॐ आमौषधय; क्ष्वेडोषधय; जल्लौषधय; विडौषधयश्च वः प्रीयंतां ॐ मति स्मृति संज्ञा चिंताभिनिबोधिक ज्ञानिनश्च वः प्रीयंतां। ॐ कोष्ठबुद्धि बीजबुद्धि पदानु-सारिबुद्धि संभिन्नश्रोतारः श्रमणाश्च वः प्रीयंतां। ॐ जलचारण जंघाचारण तंतु-चारण–भूमि—चारण पुष्पचारण श्रेणिचारण पत्रचारण फलचारण चतुरंगुलचारणा-काशचारणाश्च वः प्रीयंताम्।

ओं मनोवली वचोवली कामवलीनश्च वः प्रीयंतां। ओं सप्तर्द्धि गुण संयुक्ताश्च वः प्रीयंतां।

ओं उग्रतपो दीप्ततपो महातपो घोरतपोऽनुपमतपो महोग्रतपश्च वः प्रीयंतां। ओं मति-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानिनश्च वः प्रीयंतां ।

ॐ यम वरुण कुवेर वासवश्च वः प्रीयंतां । ॐ असुरनाग विद्युत् सुपर्णाग्नि वातस्तनितोदधिद्वीप दिक्कुमारादि दशविध भवनवासिकाश्च वः प्रीयंतां । ॐ अनन्त वासुकि-तक्षक-कर्कोटक पद्म-महापद्म-शंखपाल-कुलिक-जय-विजय नागाश्च वः प्रीयंतां । ॐ इन्द्राग्नि-यम-नैऋति वरुण-वायु कुवेरेशानधरणेन्द्र-सोमदेवता इति दशविधदिग्दे-वताश्च वः प्रीयंतां । ॐ सुरासुरोरगेन्द्र-चमरचारण-सिद्ध-विद्याधर-किन्नर-किंपुरुष-गारुड़-गंधर्व-यक्ष-राक्षस-भूतपिशाश्च वः प्रीयंतां । ॐ बुध शुक्र बृहस्पत्यर्केन्दु शनिश्चांगा-रक-राहु-केतु-तारकादि महाग्रहा ज्योतिष्क देवताश्च वः प्रीयंतां । ॐ चमर-वैरोचन-धरणेन्द्र–नंद–भूतानन्द-वेणुदेव वेणुधारि पूर्णवशिष्ट जलकान्त जलप्रभ घोष महाघोष हरिषेण हरिकान्तामितगत्यमितवाहन-वेलांजन प्रभंजनाग्निशिखाग्निवाहनाश्चेति विंशतिभवनेन्द्राश्च वः प्रीयंतां । ॐ गीतरति गीतकान्त सत्पुरुष महापुरुष सुरूप प्रतिरूप घोष महाघोष पूर्णभद्र मणिभद्र पुष्पचूल महाचूल भीम महाभीम काल महाकालश्चेति षोड़शव्यन्तरेन्द्राश्च वः प्रीयन्ताम् ।

ॐ नाभिराज जितशत्रु विजितारि स्वयंवर मेघरथ वरुणराज सुप्रतिष्ठ महासेन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुग्रीव दृढ़रथ विष्णुराज वसुपूज्य कृतशर्मा सिंहसेन भानुराज विश्वसेन सूरसेन सुदर्शन कुंभराज सुमित्र जयवर्मा समुद्रविजय अश्वसेन सिद्धार्थश्चेति चतुर्विंशति जिनजनकाश्च वः प्रीयंतां। ॐ मरुदेवी जया सुषेणा सिद्धार्था मंगला सुसीमा पृथ्वीमति लक्ष्मीमति रामा सुनन्दा वैष्णवी विजया सुशर्मा लक्ष्मणा सुदत्ता ऐरावती कमलावती सुमित्रा प्रभावती पद्मावती सुभद्रा शिवादेवी व्रह्मला प्रियकारिण्य भिधानाश्चेति चतुर्विंशतिर्जिनजनन्यो वः प्रीयंतां। ॐ वृषभमुख महायक्ष त्रिमुख यक्षेश्वर तुंबुरु कुसुमवर नंदि विजयाजित ब्रह्मेन्द्रशांतकुमारषण्मुख पाताल किन्नर गरुड़ गंधर्व महेन्द्र कुवेर वरुण विद्युत्प्रभ सर्वाह्व धरणेन्द्र मातंग नामानश्चतुर्विंशति यक्षेन्द्राश्च वः प्रीयंताम्। ॐ चक्रेश्वरी रोहिणी प्रज्ञप्ति वज्रश्रृंखला पुरुषदत्ता मनिवेगा काली ज्वालामालिनी महाकाली मानवी गोरी गान्धारी वैरोटयनन्तमती मानसी महामानसी जया पराजिता बहुरूपिणी चामुंडी कुष्मांडि पद्मावती सिद्धायिनीति चतुर्विंशति यक्षीदेवताश्च वः प्रीयंतां। ॐ कुलगिरि शिखर शेखरीभूत महाहृदादि सरोवर मध्य स्थित सहस्र दल कमल वासिन्यो मानिन्यः सकल सुर सुन्दर सुन्दरी वृन्द वन्दित पादकमलाश्च देव्यो वः प्रीयंतां। ॐ यक्ष वैश्वानर राक्षस नक्षत्र पन्नगासुर सुकुमार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पितृ विश्वमालि चमर वैरोचन महाविद्य मार विश्वेश्वर पिंडाशिनः पञ्चदश तिथी-देवताश्च वः प्रीयंतां। ॐ सौधर्मैशान सानत्कुमार माहेन्द्र ब्रह्म ब्रह्मोत्तर लान्तव कापिष्ठ शुक्र महाशुक्र शतार सहस्रारानत प्राणतारणाच्युतेंद्रादि षोडश कल्पवासिकाश्च वः प्रीयंतां। ॐ हेट्ठीम १, हेट्ठीम मज्झिम २, हेट्ठीम उवरिम ३, मज्झिम हेट्ठीम ४, मज्झिम मज्झिम ५, मज्झिम उवरिम ६, उवरिम हेट्ठीम ७, उवरिम मज्झिम ८, उवरिम उवरिम ९ नव ग्रैवेयक वैमानिकाश्च वः प्रीयंतां। ओं अभ्यर्चिमालिनी वैरोचना सोमा सोमरूपांताश्च वः प्रीयंतां।

ओं अतीतानागत वर्तमान विकल्पानेकानेक विविध गुण सम्पूर्णाष्टगुणसंयुक्त सकलसिद्धसमूहाश्च वः प्रीयंतां। सर्वकाल मपि संपच्चिरस्तु सिद्धिरस्तु पुष्टिरस्तु तुष्टिरस्तु शान्तिरस्तु कल्याणसंपदस्तु। मनः समाधिरस्तु श्रेयोभिवृद्धिरस्तु। शमयन्तु घोराणिं पापानि, पुण्यं वर्द्धतां धर्मोवर्द्धतां आयुर्वर्द्धतां कुलंगोत्रं चाभिवर्धतां स्वस्ति भद्रं चास्तु वः स्वस्ति भद्रं चास्तु नः। तथा भूयो भूयः श्रेयः श्रेयः ओं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वस्त्यस्तु वः स्वस्त्यस्तु नः स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा।

ओं नमोऽर्हते भगवते श्रीपार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्रत्नत्रयालंकृताय दिव्यमूर्ति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभामण्डल मण्डिताय द्वादशगणपरिवेष्टिताय शुक्लध्यान पवित्राय सर्वज्ञाय स्वयंभुवे सिद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रिलोकमहिताय अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय अनंत ज्ञानाय अनन्त दर्शनाय अनन्त वीर्याय अनन्त सुखाय सिद्धाय बुद्धाय त्रैलोक्य-वशंकराय सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे धरणेन्द्र फणामण्डल मण्डिताय उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयकराय अजरामराय अपवाय:, अस्माकं मृत्युं छिंद् २ भिंद् २ हन्तु कामं छिंद् २ भिंद् २, रतिकामं छिंद् २ भिंद् २. वलिकामं छिंद् २ भिंद् २, क्रोधं छिंद् २ भिंद् २, पापं छिंद् २ भिंद् २, वैरं छिंद् २ भिंद् २, वायुधारणं छिंद् २ भिंद् २, अग्निमशनं छिंद् २ भिंद् २, सर्वशत्रुं छिंद् २ भिंद् २, सर्वोपसर्गं छिंद् २ भिंद् २, सर्वविघ्नं छिंद् २ भिंद् २, सर्वभयं छिंद् २ भिंद् २, सर्वराजभयं छिंद् २ भिंद् २, सर्वचौर्यभयं छिंद् २ भिंद् २, सर्वदुष्टमृगभयं छिंद् २ भिंद् २, सर्वदोषभयं छिंद् २ भिंद् २, सर्वरोगं छिंद् २ भिंद् २, सर्वव्याधिभयं छिंद् २ भिंद् २, सर्वडामरं छिंद् २ भिंद् २, सर्वपरमंत्रं छिंद् २ भिंद् २, सर्वात्मघातं छिंद् २ भिंद् २, सर्वपरघातं छिंद् २ भिंद् २, सर्वशूलरोगं छिंद् २ भिंद् २, सर्वाक्षिरोगं छिंद् २ भिंद् २, सर्वशिरोरोगं छिंद् २ भिंद् २, सर्वमहिषमारीं छिंद् २ भिंद् २, सर्वनरमारिं छिंद् २

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भिंद २, सर्वअश्वमारिं छिंद २ भिंद २, सर्वगोमारिं छिंद २ भिंद २, सर्व महिषमारीं छिंद २ भिंद २, सर्वाजमारीं छिंद २ भिंद २, सर्वधान्यमारीं छिंद २ भिंद २, सर्ववृक्षमारीं छिंद २ भिंद २, सर्वगुल्मारीं छिंद २ भिंद २, सर्वसस्यमारीं छिंद २, भिंद २, सर्वलतामारीं छिंद २ भिंद २, सर्वपत्रमारीं छिंद २ भिंद २, सर्वपुष्पमारीं छिंद २ भिंद २, सर्वफलमारीं छिंद २ भिंद २, सर्वराष्ट्रमारीं छिंद २ भिंद २, सर्वदेशमारीं छिंद २ भिंद २, सर्वक्रूररोगवेतालशाकिनीडाकिनीभयं छिंद २ भिंद २, सर्ववेदनीयम् छिंद २ भिंद २, सर्वापसमारीं छिंद २ भिंद २, दुर्भगत्वं छिंद २ भिंद २। ओं सुदर्शन महाराजयचक्र विक्रम सत्त्व तेजोबल शौर्य वशं कुरु २, सर्वजनानन्दं कुरु २ सर्वगोकुलानन्दं कुरु २ सर्वग्रामनगरखेटकर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनानन्दं कुरु २ सर्वानन्दं कुरु २ हन २ दह २ पच २ कुट २ शीघ्रं २ वशमानय हूं फट् स्वाहा।

ओं पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां २ भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञः सर्व दर्शिनः सकलवीर्याः सकल सुखास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वरपूजिता स्त्रिलोकनाथा स्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकप्रद्योतनकरा जातिजरामरण विप्रमुक्ताः सर्वविदश्च, ओं श्री ह्रीं धृतिकीर्ति बुद्धि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लक्ष्म्यश्च वः प्रीयन्तां । ॐ वृषभादि वर्द्धमानाः शांतिकराः सकल कर्मरिपुकान्तार दुर्ग विषयेषु रक्षन्तु मे जिनेन्द्राः, आदित्य सोमाङ्गारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतु नाम नवग्रहाश्च वः प्रीयंतां २, तिथिकरण नक्षत्रवार मुहूर्त लग्न देवाश्च इहान्यत्र ग्रामनगराधिदेवताश्चते सर्वे गुरु भक्ता अक्षीण कोष कोष्ठागारा भवेयुर्दान तपोवीर्य धर्मानुष्ठानादि नित्यमेवास्तु। मातृ पितृ भ्रातृ पुत्र पौत्र कलत्र गुरु सुहृत्स्वजन सम्बन्धि बन्धुवर्ग सहितस्यास्य यजमानस्य······नामधेयस्य धनधान्यैश्वर्य-द्युति बल यशः कीर्ति बुद्धिवर्धनं भवतु । सामोदः प्रमोदो भवतु शांतिर्भवतु । तुष्टि-र्भवतु, पुष्टिर्भवतु, सिद्धिर्भवतु, वृद्धिर्भवतु, अविघ्नमस्तु, आरोग्यमस्तु, आयुष्यमस्तु, शुभंकर्मास्तु, कर्मसिद्धिरस्तु, शास्त्र समृद्धिरस्तु, इष्टसंपदस्तु, अरिष्ट निरसनमस्तु, धन धान्य समृद्धिरस्तु, काममाङ्गल्योत्सवाः सन्तु, घोराणि शाम्यन्तु, पापानि शाम्यन्तु, पुण्यं वर्द्धतां, धर्मोवर्द्धतां श्री च वर्द्धतां, आयुर्वर्द्धतां कुलं गोत्रं चाभिवर्द्धतां, स्वस्ति-भद्रं चास्तु, वः स्वस्ति भद्रं चास्तु नः झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वस्त्यस्तु ते, स्वस्त्यस्तु मे स्वाहा ।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधिव्यसनवर्जितं । अभयं क्षेममारोग्यं स्वस्तु तेषु

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विधियते । श्री शान्तिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु तव दृष्टिसुपुष्टिरस्तु कल्याणमस्तु सुखमस्त्वभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनं धान्यम् सदास्तु ।

★

❀ प्रथमं मंगलाचरणम् ❀

अर्हन्तः सिद्धाश्च सूरयः पाठकास्ससाधवस्तेऽन्वये ।
मंगललोकोत्तमशरणतयाऽखिलसंघस्याहुर्महोदयाः ॥ १ ॥

मंगलमादौ जिनवरदेवाः पुनरपि तदुपज्ञागमसेवा ।
योगिसंसदपि मंगलमस्तु ततः समन्ताद् धर्मसुवस्तु ॥ २ ॥

जम्बूधातकिपुष्करार्द्धवसुधात्तेत्रत्रये ये भवा–
श्चन्द्राम्भोजशिखण्डिकण्ठकनकप्रावृड्घनाभाजिनाः ॥
सम्यग्ज्ञानचरित्रलक्षणधरा दग्धाष्टकर्मेन्धना ।
भूतानागतवर्तमानसमये तेभ्यो जिनेभ्यो नमः ॥ ३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनान् सिद्धान् तथा सूरीन् पाठकान्साधुसत्तमान् ।
शांतिनाथविधानार्थं मयाहं प्रणमामि तान् ॥ ४ ॥
श्रीशारदां सदा नौमि तमां विघ्ननिसूदिनीं ।
समस्तेभ्योऽपिसत्वेभ्यो नित्यमभयदायिनीं ॥ ५ ॥
सर्वान्गणाधिपान् लोके कुन्दकुन्दादिसंयतान् ।
त्रियौगशुद्धयाहं नौमि पूजानिर्माणसिद्धये ॥ ६ ॥
शांतिनाथस्य पूजाया माहात्म्यं को नु वर्णयेत् ।
यद्वक्तुं नैव शक्नोति वाचस्पति रपि स्फुटं ॥ ७ ॥

अथ शांतिनाथ विधानस्य कथामुखम् ।

शांतिनाथमहविधानमेतत् केन कदा किं फल मथवेतः ।
संप्राप्तं तदहं निगदामि यदिदं वालचेष्टितं यामि ॥ ८ ॥
अथा भून्मथुराप्रान्ते सूर्यवंशी नराधिपः ।
यस्यान्यायवशेनासीत्प्रजाप्यन्यायकारिणी ॥ ९ ॥
तदा तद् ग्रामदेवेन रुषा रब्धं सुदारुणं ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

राजा प्रजा समस्तापि व्याधिभिर्व्याकुलीकृता ॥ १० ॥
उपद्रुतमिदं स्थानं किन्नरै रधिकाधिकं ।
शून्यतामव्रजत्तस्मात्प्रजाजनविवर्जितं ॥ ११ ॥
सार्थवाहः सुमत्याख्यः प्रावृट् काले किलै कदा ।
शुचौ शुक्लत्रयोदश्यामजानन् सहसाऽऽगतः ॥ १२ ॥
मेघवर्षां ततो दृष्ट्वा तदाश्रितवणिग्जनः ।
पुरिप्रविश्यतत्रास्थाच्छून्यागारे क्वचिच्चसः ॥ १३ ॥
उपद्रुततया तत्र वैकल्यमधिगच्छता ।
समागत्याधिपस्याग्रे तेनेदं विनिवेदितं ॥ १४ ॥
गतश्चैत्यालयं तत्रार्हन्तं सम्पूज्य सादरं ।
ददर्शचारणौ सार्थवाहः श्रीमुनिनायकौ ॥ १५ ॥
नमस्कृत्य पुरः स्थित्वा विनयेनापृच्छच्चसः ।
पुरमेतद् भवेच्छान्तं केनोपायेन भो प्रभो ! ॥ १६ ॥
निशम्येदं समाहापि मुनिराडग्रसम्भवः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कर्त्तव्यं भो महाभाग ! शांतेः पूजाविधानकम् ॥ १७ ॥

॥ मन्त्रोद्धार ॥

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्री शांतिनाथाय सकल विघ्नहराय ॐ ह्रॉं ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा अमुकस्य सर्वोपद्रव शांतिं लक्ष्मी लाभं च कुरु कुरु *नमः (स्वाहा)

मन्त्रराजमिदं सम्यगवधानोपपत्तितः ।
जपितं जपमानाय शांतिदं श्रीकरं परम् ॥ १८ ॥
साधनोपाय मेतस्य यथोदिष्टं नर ! स्मर ।
यतो विघ्ना विनश्यन्ति सम्पदः प्राप्नुवन्ति च ॥ १९ ॥
षोडशाहे सिते पक्षे प्रारभेतादिमाद्दिनात् ।
पूर्णिमायां नयेत् पूर्तिंजप्त्वा नित्यं सहस्रशः ॥ २० ॥
यन्त्रं संपूजयेत् पूर्वं ततो मन्त्रं जपेत् पुमान् ।
सुगन्धिकुसुमैरेतावद्भिः संदीपधूपयुक् ॥ २१ ॥

---

* नाम एवं वदेद्‌जापे होमं स्वाहेति पल्लवं ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

झल्लरा यन्त्रोद्धार ॥

झल्लरीद्वयमानीयतत्पृष्ठे यन्त्रमालिखेत् ।
पद्ममष्टदलं कृत्वा मध्येऽर्हन्निति पूरयेत् ॥ २२ ॥
ऊर्ध्वं सिद्धानुदक् सूरीन् प्रागुपाध्यायसम्पदम् ।
वामे साधुपदं दत्वा दिशापत्राणि पूरयेत् ॥ २३ ॥
वह्निकोणात् समारंभ्य यावदीशदलं क्रमात् ।
एसोपञ्चणमोयारो इत्यादि श्लोकमालिखेत् ॥ २४ ॥
पूर्वोक्तेन च मन्त्रेण परितोवेष्टयेदिदं ।
हैम्याशलाकयाचार्यो यक्षकर्दमतो लिखेत् ॥ २५ ॥
दर्पणाभिमुखं यन्त्रं स्थापयेदुन्नते स्थले ।
दर्पणे पतितं यन्त्र-विम्बमित्यभिषेचयेत् ॥ २६ ॥
जिनागारोपरिस्थाने ताडयेज्झल्लरीमुखं ।
पूर्वं पश्चाच्चपूजायाः शांति भक्त्युक्ति पूर्वकम् ॥ २७ ॥
झल्लर्याध्वनिरेतस्या यावद्देशमभिव्रजेत् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विघ्नौघः प्रलयं यायात् किं चित्रं मन्त्रसाधनात् ॥ २८ ॥
जितेन्द्रियः प्रश्नसह आचार्योऽस्तु विधानवित् ।
यजमानस्तु श्रद्धावान्धीरोऽर्हत्पूजनोत्सकः ॥ २९ ॥
सपत्नीकोऽभिषेकार्चा सामग्रींहस्तसात्कृतां ।
उपादाय ततो गच्छे दीर्यापथशुद्धितः ॥ ३० ॥
प्रसन्नात्मा प्रविश्यार्हद्गेहं सम्पादितार्चनः ।
गृहस्थाचार्यमासाद्य प्रार्थयेच्छोभने दिने ॥ ३१ ॥
जिनयज्ञमहं कर्त्तुमुत्सुकोस्मि महाशय ।
भवानस्ति विधानज्ञः प्रमाण मिति मे रुचिः ॥ ३२ ॥
वदेद्तः सचाचार्यो भो भव्य भवता मयं ।
विचारः श्लाघ्यता मेतीत्युपाकर्त्तुं जिनक्रतुं ॥ ३३ ॥
ब्रह्मचर्यं गृहाणैक-भक्तपूर्वक मादरात् ।
परुषोक्तिपरित्यागं कालुष्यपरिवर्जनम् ॥ ३४ ॥
सर्वसत्वेषु सौहार्दं मौदार्यश्च समाश्रयन् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इत्युक्त्वा तिलकं कुर्याद् मालेऽमुष्य सुमेधसः ॥ ३५ ॥
अथागत्य तदादेशान्मण्डपं सुमनोहरं ।
संपाद्य बेदिकां तत्र समवृत्तां समुद्धरेत् ॥ ३६ ॥
मंडलं पूरयेत्तत्र चतुः प्राकार मुत्तमं ।
कुर्वीत कोष्ठका नष्टौ द्विर्द्विरङ्कानतः परं ॥ ३७ ॥
अथ श्रीजिनचन्द्रस्य श्रुतस्य च गुरोरपि ।
यथाविधि विधायार्चा मतः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥ ३८ ॥
लब्ध्वाजां प्रथमं गुरोरिहततः पूजा समारभ्यते ।
तत्रादौ ससहस्रनाम शकलीकारः प्रतिज्ञायते ॥ ३९ ॥
पश्चात् श्रीकलिकुण्डपार्श्वभगवत्पूजादितो मण्डप—
शुद्धिः शान्तिजिनेश्वरप्रतिकृतेः संस्थापनार्थं नृप ! ॥ ४० ॥
विन्यस्यांके शान्तिनाथस्य मूर्तिं वाद्योद्घोषै र्नीरगन्धादिपूर्तिं ।
पूजांकुर्वन् शांतिभक्त्युक्तितस्तु जप्त्वा मन्त्रं यातु पुण्याहवस्तु ॥४१॥
यज्ञमन्ते प्रकर्त्तव्यं दानसन्मानमित्यपि ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समेतानां मनुष्याणां यथाशक्ति सुतोषदं ॥ ४२ ॥

❀ अथ पूजा प्रारभ्यते ❀

तत्रादौ स्थापना

आगच्छागच्छ भो शान्ते तिष्ठ तिष्ठात्र मण्डले ।
प्रत्यूहपरिहाराया स्माकं सन्निकटो भव ॥
नामापि शांतिस्तव कर्मशांतिर्धर्मोऽपि लोके परिरब्धशांतिः ।
हे नाथ तेनाथ वयं श्रयाम स्त्वां जन्मसाफल्यमतोऽत्रयामः ॥

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ सर्वकर्मवन्धनविमुक्त सकलविघ्नशान्तिकम् सम्पूर्णोत्तम हे पञ्चम-चक्रेश्वर अत्रावतर अवतर संवौषट् । (इत्याह्वाननं)

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ सर्वकर्मवन्धनविमुक्त सम्पूर्णोत्तम मंगलप्रद हे द्वादशकामदेवेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनं ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ सर्वकर्मवन्धनविमुक्त संपूर्णोत्तम मंगलप्रद हे षोडषोत्तमतीर्थंकर अत्र मम सन्निकटो भव भव वषट् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथ स्तवनं ॥

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ न स्नेहाच्छरणं प्रयान्ति भगवन् पादद्वयं ते प्रजाः हेतुस्तत्र-विचित्रदुःखनिचयः संसारघोरार्णवः ॥ अत्यंतस्फुरदुग्ररश्मिनिकरव्याकीर्णभूमंडलो । ग्रैष्मः कारयतींदुपादसलिलच्छायानुरागं रविः ॥ १ ॥ क्रुद्धाशीविषदष्टदुर्जयविषज्वा-लावलीविक्रमो । विद्याभेषजमंत्रतोयहवनैर्याति प्रशांतिं यथा ॥ तद्वत्ते चरणारुणांबुज-युगस्तोत्रोन्मुखानां नृणां । विघ्नाः कायविनाशकाश्च सहसा शाम्यंत्यहो विस्मयः ॥ २ ॥ संतप्तोत्तमकांचनक्षितिधरश्रीस्पर्द्धिगौरद्युते । पुंसां त्वच्चरणप्रणामकरणात्पीडाः प्रयांति क्षयं ॥ उद्यद्भास्करविस्फुरत्करशतव्याघातनिष्कासिता । नानादेहिविलोचनद्युतिहरा शीघ्रं यथा शर्वरी ॥ ३ ॥ त्रैलोक्येश्वरभंगलब्धविजयादत्यंतरौद्रात्मका–न्नानाजन्मश-तांतरेषु पुरतो जीवस्य संसारिणः ॥ को वा प्रस्खलतीह केन विधिना कालोग्रदावान-लात् । न स्याच्चेत्तवपादपद्मयुगलस्तुत्यापगा वारणं ॥ ४ ॥ लोकालोकनिरंतरप्रवितत-ज्ञानैकमूर्ते विभो । नानारत्नपिनद्धदंडरुचिरश्वेतातपत्रत्रय ॥ त्वत्पादद्वयपूतगीतरवतः शीघ्रं द्रवंत्यामया । दर्पाध्मातमृगेन्द्रभीमनिनदाद्वन्या यथा कुंजराः ॥ ५ ॥ दिव्य-स्त्रीनयनाभिराम विपुलश्रीमेरुचूडामणे ॥ भास्वद्बालदिवाकरद्युतिहर प्राणीष्टभामंडल ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अव्यावाधमचिंत्यसारमतुलं त्यक्तोपमं शाश्वतं ॥ सौख्यं त्वच्चरणारविंदयुगलस्तुत्यैव संप्राप्यते ॥ ६ ॥ यावन्नोदयते प्रभापरिकरः श्रीभास्करो भासयँस्तावद्धारयतीह पंकजवनं निद्रातिभारश्रमं ॥ यावत्त्वच्चरणद्वयस्य भगवन्न स्यात्प्रसादोदयस्तावज्जीवनिकाय एष वहति प्रायेण पापं महत् ॥ ७ ॥ शांतिं शांतिजिनेन्द्र शांतमनसस्त्वत्पादपद्माश्रयात् । संप्राप्ताः पृथिवीतलेषु वहवः शांत्यर्थिनः प्राणिनः ॥ कारुण्यान्मम भाक्तिकस्य च विभो ! दृष्टिं प्रसन्नां कुरु । त्वत्पादद्वयदैवतस्य गदतः शांत्यष्टकं भक्तितः ॥ ८ ॥ शांत्यष्टकानि यस्यास्ते त्रिकालं च त्रिशुद्धितः तस्य फलं यथायोग्यं पूज्यपादाय पृच्छ भो ! ॥ ९ ॥

अथ अष्टकं ॥

ये नित्यमेव जलसंभृतहेमकुंभ–धाराजलेन जिनपादमिहार्च्चयंति ॥
ते निश्चयेन भुवने नृपतित्वमाप्य । राज्याभिषेकमचिरेण नरा लभंते ॥१॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय जलं० ॥

कर्पूरकुंकुमरसेन सुचंदनेन । ये जैनपादकमले परिलेपयंति ॥
जायंत एव भुवि ते च सुगंधदेहा । दिव्यांगनापरिवृता सततं वसन्ति ॥२॥
ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय चंदनं० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

येऽभ्यर्चयति जिनपुंगवपादपद्मं । शाल्यक्षतैरतिसितैः सकलैः सुगंधैः ॥
दीर्घायुषो जगति ते च भवन्ति नूनं नीरोगिणः कुसुमशस्त्रसमा भवंति ॥३॥
ॐ स्रां स्रीं स्रूं स्रौं स्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय अक्षतान्० ॥

ये मल्लिकावकुलमालतिकाप्रसूनैरारक्तशुभ्रकमलैर्वरनागकुंदैः ॥
तेऽभ्यर्चयंति जिनपादसरोजयुग्मं पुष्पोत्तरं सुरविमान मुपाश्रयन्ति ॥४॥
ॐ रां रीं रूं रौं रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शांतिनाथाय पुष्पं० ॥

ये स्वर्णपात्रविहितोज्वलशालिभक्तं-सर्पिःपयोगुडयुतंवहुभक्ष्ययुक्तं ॥
दास्यन्तिदेवपुरतश्चरुकंसुभक्त्या । ते भोगिनोगतरुजा धनधान्यवंतः ॥५॥
ॐ व्रां व्रीं व्रूं व्रौं व्रः जगदापद्विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय चरुं ० ॥

कर्पूरनिर्मितसमुज्वलदीपकेन आरार्तिकं जिनवरस्य सदाश्रयन्ति ॥
दैदीप्यमानमणिरश्मिमतीहहर्म्यें, तिष्ठन्ति ते जगति भव्यजना सुखेन ॥६॥
ॐ भ्क्ष्रां भ्क्ष्रीं भ्क्ष्रूं भ्क्ष्रौं भ्क्ष्रः..........................ह्रीं शांतिनाथाय दीपं० ॥

कालागुरुप्रभृतिभिः परिकल्पितेन धूपायने परिमलेन च धूपजेन ॥
संभावयन् जिनपपादसरोजयुग्मं सौभाग्यवान् कुसुमसायकसंनिभः स्यात् ॥७॥
ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः ....ह्रीं शांतिनाथाय धूपं० ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नारङ्गपूगकदलीफलनारिकेलैः जम्बीरचूतपनसैरपि शोभमानैः ॥
ये शान्तिनाथचरणौ सततं यजंते ते वांछितं फलमनल्पधियो लभन्ते ॥८॥

ॐ ख्रां ख्रीं ख्रूं ख्रौं ख्रः .... फलं० ॥ ८ ॥

नीरादिफलपर्यन्तै र्द्रव्यै रर्हन्त मर्चतां ।
सतांविघ्नाविनश्यन्ति दिशः कामान्दुहन्ति च ॥९॥

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः...............अर्घ्यं० ॥ ६ ॥

अथ स्तवनम् ।

ॐकारज्ञानरूपाय ह्रीं मध्ये स्वामिने नमः ।
स्थावरांगिदयांगाय एकानेकात्मने नमः ॥ १ ॥
श्रीमते चक्रिनाथाय शांतिरूपात्मने नमः ।
तिष्ठते ज्ञानगर्भाय नानाभाषात्मने नमः ॥ २ ॥
स्वयं विहीनवांछाय गीतपूतात्मने नमः ।
शांताष्टकर्ममूलाय तीर्थकर्त्रात्मने नमः ॥ ३ ॥
असंकल्पितरूपाय रामामुक्तात्मने नमः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यत्याचारे च दक्षाय सर्वात्मस्वात्मने नमः ।। ४ ।।
रत्नत्रयेण युक्ताय बोधव्याप्तात्मने नमः ।
परत्रसौख्यदात्रे च द्रवीभूतात्मने नमः ।। ५ ।।
वाचा विश्वहितार्थाय शांतिनाथात्मने नमः ।
तीव्रविषापहाराय कुरुवंशपते नमः ।। ६ ।।
ऋषिचित्तप्रहर्षाय कुलक्रमभृते नमः ।
सदाद्भुतसुरूपाय ह्रीं बीजेशायिने नमः ।। ७ ।।
नागेन्द्रवत्सुधीराय मद्विघ्ननाशिने नमः ।
स्वामिसंज्ञाप्रशोभाय भयहर्त्रे नमो नमः ।। ८ ।।
शांत्यष्टकमिदं कण्ठे येदधत्युरुहारवत् ।
तेषांगृहे सम्पदः स्युर्विपदो न कदापि तु ।। ९ ।।

प्रथम वलयाष्ठ कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्निं विन्दु षट्स्वरं ।
हं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं शांतिनाथं मह्माम्यहं ।। १ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय अशोक तरु सत्प्रातिहार्यमंडिताय शोभनपदप्रदाय ह्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रव शांतिकराय जलमित्यादि ॥ १ ॥

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्निं विन्दु षट्स्वरं ।
भं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं शांतिनाथं महाम्यहं ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय सुरपुष्पवृष्टि सत्प्रातिहार्यमंडिताय सुरपुष्पवृष्टिशोभनपदप्रदाय भ्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलमित्यादि ॥ २ ॥

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्निं विन्दु षट्स्वरं ।
मं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं शांतिनाथं महाम्यहं ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय दिव्यध्वनि सत्प्रातिहार्यमंडिताय दिव्यध्वनि शोभनपद प्रदाय म्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलमित्यादि ॥ ३ ॥

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्निं विन्दु षट्स्वरं ।
रं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं शांतिनाथं महाम्यहं ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय चामरोज्वल सत्प्रातिहार्यमंडिताय चामरोज्वलशोभनपदप्रदाय र्म्ल्व्र्यूं बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलमित्यादि ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्नि विन्दु षट्स्वरं ।
घं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं शांतिनाथं महाम्यहं ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय सिंहासनसत्प्रातिहार्यमंडिताय सिंहासनप्रातिहार्यशोभनपदप्रदाय घ्म्ल्व्य्ूँ बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलमित्यादि ॥ ५ ॥

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्नि विन्दु षट्स्वरं ।
झं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं शांतिनाथं महाम्यहं ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय भामंडलसत्प्रातिहार्यमंडिताय भामंडलप्रातिहार्यशोभनपदप्रदाय झ्म्ल्व्य्ूँ बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलमित्यादि ॥ ६ ॥

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्नि विन्दु षट्स्वरं ।
सं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं शांतिनाथं महाम्यहं ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय दुंदभिसत्प्रातिहार्यमंडिताय दुंदभिप्रातिहार्यशोभनपदप्रदाय स्म्ल्व्य्ूँ बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलमित्यादि ॥ ७ ॥

स्ववर्गोपगतां पीडां क्षराग्नि विन्दु षट्स्वरं ।
खं बीजेन प्रहूः स्वघ्नं शांतिनाथं महाम्यहं ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय छत्रत्रयसत्प्रातिहार्यमंडिताय छत्रत्रयशोभनपदप्रदाय सर्वविघ्न-हराय ख्म्ल्व्य्ूँ बीजाय सर्वोपद्रवशांतिकराय जलमित्यादि ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हभमरघझसखान् बीजवर्णान् विधानतः ।
प्रलयं यांतु विघ्नौघाः स्तोमेनार्घ्येण संयजे ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय प्रातिहार्याष्टसहिताय बीजाष्टमंडनमंडिताय सर्वविघ्नशांतिकराय पूर्णार्घ्यं० ॥

॥ अथ द्वितीय बलय षोडश कोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

श्रीशतेन्द्रयोगिवृंदवंद्यपादपंकजम् ।
शाश्वतेद्धबोधदृष्टिवीर्यसौख्यभास्करम् ॥
सुप्रशस्तयोगदग्धघातिकर्म वैरिणं ।
श्रीजिनेन्द्रदेवमेव मर्चयाम्यहं सदा ॥ १ ॥

ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे विदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखंडे भूतभविष्यत्वर्तमानार्हत्परमेष्टिपदपंकजे सन्मति तद्भक्त्युपेतामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥

अष्टकर्मविप्रमुक्तमष्टसद्गुणोज्वलं ।
दुष्टभावदुःखदाह मिष्टमाधुरागदम् ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुष्ठुदर्शनावलोकनार्चितं तुलोज्झितं ।
तोष्टवीमि निष्ठितार्थ मिद्धसिद्धसंचयम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखंडे भूतभावित-वर्तमान सिद्धपरमेष्ठिपद्पंकजे सम्मति सद्भक्त्युपेतामलतरखंडोज्झितनिदानबन्धनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ २ ॥

आचरंतिचारुचित्तपंचकं यतः स्वयं ।
चारयंत्यनुग्रहोरुबुद्धितः समाश्रितान् ॥
शूरमारमल्लमानमर्द्दकान् गुणोज्वलान् ।
तान्शरण्यभद्रदांश्च सूरिसंज्ञकान्यजे ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखंडे भूतभावित वर्तमानाचार्यपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ ३ ॥

द्वादशांगसांगबाह्यशास्त्रवार्द्धिपारगान् ।
साधुवादवज्रभिन्नमत्तवादिभूधरान् ॥
साद्यनाद्यनंतसांत मोक्षमार्गदेशकान् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आदरेण तान्यजामि पाठकान् गुणांबुधीन् ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे भरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखंडे भूतभावि-वर्तमान पाठकपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ ४ ॥

मोक्षहेतुभूतधर्मशुक्लयोगतत्परान् ।
दक्षचक्षुरादिदुष्टवादिरोधनक्षमान् ॥
अक्षयोरुलक्षमेव सत्कटाक्षवीक्षणान् ।
मोक्षसौख्यसाधुसंगतान्यजामि सिद्धये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवेभरतैरावतविदेहादिशतैकसप्ततिक्षेत्रार्यखंडे भूतभावित-वर्तमान सर्वसाधुपरमेष्ठिपदपंकजे सन्मतिसद्भक्त्युपेतामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ ५ ॥

(अनुष्टुप)

पंचविंशति दोषेभ्यो विमुक्तं साङ्गमुत्तमम् ।
आप्तागमपदार्थानां श्रद्धानं तदहं यजे ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे शुद्धसम्यक्त्वामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi.

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिंशतासमंशतत्रयं च षट्मतेत्रिधान् ।
द्वादशांगविस्तृतं सपूर्वमायतं श्रुतम् ॥
नीरगन्धतंदुलैस्त्रिधार्वाधं च संयजे ।
केवलं परं मनः सुपर्ययम् स्रगादिभिः ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यग्ज्ञानामलतरखंदोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ ७ ॥

पंचभिर्महाव्रतैः समं त्रिगुप्तिसंयुतं ।
पंचधासमित्युपेतमित्यदो गुणोज्वलं ॥
सच्चरित्रमुत्तमं विनान्नमुक्ति रित्यतो ।
ध्यानसिद्धिकारकं तदेव सर्वदा यजे ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्री जगदापद्विनाशनहेतवे सम्यक्त्वचारित्रामलतरखंडोज्झितनिदानबंधनाय कृतेज्याय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ ८ ॥

यज्ज्ञानावर्णकर्म पंचप्रकृतिसंयुतं, तन्निर्मूलनसिद्ध्यर्थं दयाकान्तंजिनं यजे ।

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानावर्णमहाबन्धबन्धनकृतेसति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शनावरणं कर्म नवप्रकृति धारितं ॥ तन्नि·········॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीं दर्शनावर्णकर्मबन्धबन्धनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलं ॥ १० ॥

वेदनीयंतुयत्कर्म सातासातविकल्पकं ॥ तन्नि······॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्री वेदनीयकर्मबन्धबन्धनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलं ॥ ११ ॥

प्रचंडमोहनीयं यदष्टाविंशतिभेदभृत् ॥ तन्नि······॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्री प्रचंडमोहनीयकर्मबन्धबन्धनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलं ॥ १२ ॥

भवप्रिया कर्मणां या चतुःप्रकृतिसंततिः ॥ तन्नि······॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं श्री आयुकर्मबन्धबन्धनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलं ॥ १३ ॥

नामकर्म यदाख्यातं सप्तोनशतभेदभृत् ॥ तन्नि······॥ १४ ॥

ॐ ह्रीं श्री नामकर्मबन्धबन्धनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलं ॥ १४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोत्रकर्म समाख्यातं प्रशस्तं चाप्रशस्तकं ॥तन्नि॰ • • • •॥ १५ ॥

ॐ ह्रीं श्री गोत्रकर्मबन्धबन्धनकृते सति तत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलं ॥ १५ ॥

अंतरायाभिधंकर्म पंचप्रकृतिनायकं ॥तन्नि॰ • • • •॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं श्री अंतरायकर्मबन्धबन्धनकृते सतितत्कर्मविपाकोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलं ॥ १६ ॥

दर्शनज्ञानचारित्रधारकान् परमेष्ठिनः ।
स्वभावमनुयुञ्जानान् यजे पूर्णार्घतोऽधुना ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठिपददायक दर्शनज्ञानचारित्रकारक कर्माष्टकवारक श्री शांतिनाथाय-षोडशांग द्वितीयबलयमध्ये पूर्णार्घ्यम् ॥ १७ ॥

॥ अथ तृतीयवलयमध्ये द्वाविंशतिकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

सद्भक्तिकृतभारेण निजावासाद् जिनालये ।
आयादिन्द्रः सगीर्वाणः सम्यग्दर्शनसिद्धये ॥

ॐ ह्रीं श्रीद्वाविंशति देवेन्द्रागच्छत सन् परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

असुरेन्द्रकुमारेण परिवारभृता सता ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृता द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री असुरेन्द्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ १ ॥

धरणेन्द्रकुमारेण परिवारभृता सता ।
कृता द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्री धरणेन्द्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेनपादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ २ ॥

सुपर्णेन्द्रकुमारेण परिवारभृता सता ।
कृता द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ ३ ॥

ॐ ह्रीं श्री सुपर्णेन्द्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलमित्यादि ॥ ३ ॥

द्वीपेंद्रेणकुमारेण परिवारभृता सता ।
कृता द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ ४ ॥

ॐ ह्रीं श्री द्वीपेंद्रकुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ ४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदधींद्रकुमारेण परिवारभृता सता ।
कृता-द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं श्रीउदधीन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ ५ ॥

स्तनितेंद्रकुमारेण परिवारभृता सता ।
कृता-द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ ६ ॥

ॐ ह्रीं श्रीस्तनितेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ ६ ॥

श्रीमद्विद्युत्कुमारेण परिवारभृता सता ।
कृता-द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ ७ ॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युत्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ ७ ॥

दिक्कुमारेन्द्रभावेन परिवारभृता सता ।
कृता-द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ ८ ॥

ॐ ह्रीं श्रीदिक्कुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ ८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पावकेंद्रसुभावेन परिवारभृता सता ।
कृता-द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्रीअग्निंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ ९ ॥

वातेंद्रसुकुमारेण परिवारभृता सता ।
कृत-द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ १० ॥

ॐ ह्रीं श्रीवातकुमारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ १० ॥

किन्नरेन्द्रसुभावेन परिवारभृता सता ।
कृता-द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ ११ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकिन्नरेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ ११ ॥

किंपुरुषेंद्रदेवेन परिवारभृता सता ।
कृता-द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ॥ १२ ॥

ॐ ह्रीं श्रीकिंपुरुषेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ १२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महोरगेन्द्रभावेन परिवारभृता सता ।
कृता–द्रव्याष्टकेनार्चा शांतिसद्गुणसिद्धये ।। १३ ।।

ॐ ह्रीं श्री महोरगेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ।। १३ ।।

गन्धर्वेन्द्रसुभावेन परिवारभृता सता ।। कृता—

ॐ ह्रीं श्री गंधर्वेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ।। १४ ।।

यक्षेन्द्रेण सुभावेन परिवारभृता सता ।। कृता—

ॐ ह्रीं श्री यक्षेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ।। १५

राक्षसेन्द्रेण भावेन । परिवारभृता सता ।। कृता—

ॐ ह्रीं श्री राक्षसेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलं इत्यादि ।। १६ ।।

भूतेन्द्रेण सुभावेन । परिवारभृता सता ।। कृता—

ॐ ह्रीं श्री भूतेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलं इत्यादि ।। १७ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पिशाचेन्द्रेण भावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं:श्री पिशाचेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ १८ ॥

तारकाणामधीशेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ह्रीं श्रीचन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ १६ ॥

भास्करेन्द्रसुभावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्रीभास्करेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ २० ॥

सौधर्मेन्द्रसुभावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्रीसौधर्मेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ २१ ॥

ईशानेन्द्रसुभावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्रीईशानेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ २२ ॥

सनत्कुमारदेवेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्रीसनत्कुमारेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ २३ ॥

माहेंद्रेण सुभावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं ी माहेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ २४ ॥

ब्रह्मेंद्रेण सुभावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्री ब्रह्मेंद्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ २५ ॥

लांतवेंद्रसुभावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्री लांतवेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं इत्यादि ॥ २६ ॥

शुक्रेन्द्रेण सुभावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्री शुक्रेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्री शांतिनाथाय ॥ जलं इत्यादि ॥ २७ ॥

शतारेन्द्रेण भावेनं । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्रीशतारेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्माचिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ २८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आनतेन्द्रेण भावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्रीआनतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ २९ ॥

प्राणतेन्द्रसुभावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्रीप्राणतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ ३० ॥

आरणेन्द्रसुभावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्रीआरणेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ ३१ ॥

अच्युतेन्द्रसुभावेन । परिवारभृता सता ॥ कृता—

ॐ ह्रीं श्रीअच्युतेन्द्रेण स्वपरिवारसहितेन पादपद्मार्चिताय जिननाथाय तथैव वरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं इत्यादि ॥ ३२ ॥

भावनव्यन्तरज्योतिः स्वर्गप्रमुखवासिनः ।
द्वात्रिंशदिंद्रान्यज्ञेऽस्मिन् । आह्वयामिसुदार्हते ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं श्रीचतुर्णिकायदेवेन्द्रपूजित श्रीशांतिनाथाय पूर्णार्घं० ॥ ३३ ॥

या यापिदेवतास्थाने, यत्रयत्रप्रवर्त्तते ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varaṇasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समागच्छतु सामुष्मिन्जिनयज्ञमहोत्सवे ॥

* इति चतुःषष्टिकोष्ठोपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत् *

चित्तेनदब्धंबहुरूपमेनः तदुद्भवा व्याधिरुपैतं या मां ।
तद्विघ्नशांतिस्तवपूजनेन श्रीशांतिनाथाय नमोस्तु तुभ्यम् ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्रीमानसिकपापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं इत्यादि ॥ १ ॥

वाक्येनदब्धंबहुरूपमेनः तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ।
तद्विघ्नशांतिस्तवपूजनेन श्रीशांतिनाथायनमोस्तु तुभ्यम् ॥ २ ॥

ॐ ह्रीं श्रीवाचनिक पापोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं इत्यादि ॥ २ ॥

कामेन दब्धं बहुरूपमेनः तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥

ॐ ह्रीं कायिकपापोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांति० ॥ ३ ॥

च्युत्याथलक्ष्मीपुरराज्यगेहात् तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥

ॐ ह्रीं जिनराज लक्ष्मीपुरराज्यगेहपदभ्रष्टोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं ॥४॥

पूर्वार्जिताघाद्विपदोह्यनेकाः तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥

ॐ ह्रीं दरिद्रोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय ॥ जलं ॥ ५ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जलोदराद्या बहुशोऽपिरोगाः तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥

ॐ ह्रीं भीमभगंदरगलितकुष्टगुल्मरक्तपित्तवातकफस्फोटकाद्युपद्रवनिवारकाय ॥ जलं० ॥ ६ ॥

इष्टच्युतिश्चैवमनिष्टयोगः । तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥

ॐ ह्रीं इष्टवियोगानिष्टसंयोगोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलं ॥ ७ ॥

चक्रेस्वकीयेतरके परोच्चे । तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥

ॐ ह्रीं स्वचक्रपरचक्रोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ ८ ॥

नानाख्यशस्त्रं भुवनत्रयस्थं, तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥

ॐ ह्रीं विविधायुधोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ ९ ॥

दुष्टाशयःकंचर पापकारी, तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥

ॐ ह्रीं जलचरजीवदुष्टोद्भवोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ १० ॥

चतुष्पदोंगीवनपर्वतस्थः, तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥

ॐ ह्रीं व्याघ्रसिंहगजादिवनपर्वतवासिश्वापदाद्युपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलं ॥११॥

भूस्थाः नभस्था अपिहिंस्रजीवा, तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥

ॐ ह्रीं भूचरगगनचरक्रूरजीवोद्भवोपद्रनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ १२ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हालाहलक्ष्वेऽभृतौगिनोये, तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥ १३ ॥

ॐ ह्रीं व्यालवृश्चिकादि विगदुर्द्धरोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ १३ ॥

ये शृंगिणोवानखिनोऽतितीव्राः, तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥१४॥

ॐ ह्रीं दुष्टजीवपदकरनखोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ १४ ॥

ये दंष्ट्रिणः कंटकिनोऽथवाये, तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥१५॥

ॐ ह्रीं चंचुतुंडदाढा कंटकोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ १५ ॥

अत्युग्रदावाग्निनभस्थलांता, तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥ १६ ॥

ॐ ह्रीं दावानलोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ १६ ॥

कल्पांतकालोपम वायुवेगाः तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥ १७ ॥

ॐ ह्रीं प्रचंडपवनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ १७ ॥

यानात्पतत्सिंधुसरित्सुदेवा, तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥ १८ ॥

ॐ ह्रीं नौकास्फुटित पतनोद्भवोपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ १८ ॥

भयानकैर्भूवनपर्वताद्यैः तदुद्भवाव्याधि रुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥ १९ ॥

ॐ ह्रीं वननगमेदिनीभयंकरोपद्रव निवारकाय श्री शांतिनाथाय ॥ जलं० ॥ १९ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सरित्सरोब्धिह्रदकूपवाप्यः । तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥२०॥

ॐ ह्रीं श्रीनदीसरोवराब्धिकूपह्रदोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं ॥ २० ॥

तडित्पतन्मेघनवांबुवृष्टिः । तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥२१॥

ॐ ह्रीं श्रीविद्युत्पातादिभीमांबुवृष्ट्युपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय ॥ जलं ॥ २१ ॥

रणांगणेऽरिर्निकटप्रपन्नः तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥२२॥

ॐ ह्रीं संग्रामस्थलारिनिकटोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलम्० ॥ २२ ॥

ये शाकिनीडाकिनिकापिशाचाः तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥२३॥

ॐ ह्रीं शाकिनीडाकिनीभूतप्रेत पिशाचादिभयनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलम्० ॥ २३ ॥

उच्चाटनस्तम्भनमोहनं च, तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥२४॥

ॐ ह्रीं मोहनस्थंभनोच्चाटनप्रमुखदुष्टविद्योपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलम्० ॥२४॥

दुष्टग्रहाणामुदयोऽतितीव्राः तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥२५॥

ॐ ह्रीं दुष्टग्रहाद्युपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ २५ ॥

आवेष्टितांगा दृढश्रृंखलाद्यैस्तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्वि० ॥२६॥

ॐ ह्रीं श्रृङ्खलाद्युपद्रव निवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ २६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्पायुरित्युग्रतरामनस्यं, तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्धि० ॥२७॥

ॐ ह्रीं अल्पमृत्यूपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ २७ ॥

शस्याद्यनुत्पत्तिवशेनदुःखं, तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्धि० ॥२८॥

ॐ ह्रीं दुर्भिक्षोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ २८ ॥

उद्योगितायामपिनास्तिलाभः, तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्धि० ॥२९॥

ॐ ह्रीं व्यापारवृद्धिरहितोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ २९ ॥

संबध्यपत्यं न ततोपि दुःखं, तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्धि० ॥३०॥

ॐ ह्रीं बन्धुत्वोपद्रवनिवारकाय श्री शांतिनाथाय जलम् ॥ ३० ॥

रमा न रामा न च वंशहेतुः, तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्धि० ॥३१॥

ॐ ह्रीं अकुटुम्बोपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ३१ ॥

पापोदयाद्दुर्यशएवलोके, तदुद्भवाव्याधिरुपैति या मां ॥ तद्धि० ॥३२॥

ॐ ह्रीं अपकीर्त्युपद्रवनिवारकाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ३२ ॥

विश्वस्यकल्याणगुणायदक्षं, हेतुंश्रियोहन्निति नामधेयं ।
तीर्थेश्वरंचक्रिपदेन युक्तं श्री कामदेवोक्तिधरं यजामि ॥ ३३ ॥

ॐ ह्रीं संपूर्णकल्याणमंगलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ३३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शर्मोदधिं केवलबोधभाजं चिन्तामणिं वांछित वस्तुदाने ।। तीर्थे० ।।३४।।

ॐ ह्रीं चिन्तामणिसमानचिन्तितफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।। ३४ ।।

कल्पद्रुवद्देहवतां पुनीतं तापापहंसौख्यकरं श्रितानां ।। तीर्थे० ।।३५।।

ॐ ह्रीं कल्पवृक्षोपमकल्पितार्थफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।। ३५ ।।

नामस्मृतिर्यस्य हि कामधेनु, र्मनोरथंपूरयतिप्रभोर्नः ।। तीर्थे० ।।३६।।

ॐ ह्रीं कामधेनूपमकामनापूर्णफलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।।३६।।

महात्मनेधर्मधुरंधराय यतीश्वराः संस्पृहयन्ति यस्मै ।। तीर्थे० ।।३७।।

ॐ ह्रीं परमोज्वल धर्मध्यान बाधारहित अवद्यबोध प्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।। ३७ ।।

लोकत्रयीनेत्रमहोत्सवाय कायोयदीयोप्युदुतोन्युपायः ।
समस्ति यो विस्मययुक्त सुभेषो, जिनेश्वरं तं सततं यजेऽहं ।। ३८ ।।

ॐ ह्रीं कामदेवस्वरूप प्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।। ३८ ।।

सौगन्ध्यमाप्नोतितनौतु तादृक्, नचन्दनेनाम्बुरुहेऽपि यादृक् ।
इन्द्रादिदेवैस्मरणीयमेवं जिनेन्द्रदेवं मुहुरर्चयामि ।। ३९ ।।

ॐ ह्रीं सुगन्धशरीरप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।। ३९ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भाव्यांबुजाल्हादकरं पवित्रं भामंडलं भास्करवत्तु यस्य ।
त्रैलोक्यनेत्रोत्सवकृत्सुजन्म समादधानं जिनपंयजेऽहं ॥ ४० ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यनाथाह्लादकारकपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ४० ॥

क्षीराब्धिशुभ्रकिरणोत्कर लोकपूर्णं, डिंडीरपिंडधवलोच्चमसद्‌गुणाढ्यम् ।
गायंतिदेवनिकरा बहुभक्तियुक्ताः स्वात्मस्थितं गुणगणं नितरां लभन्ते ॥ ४१ ॥

ॐ ह्रीं परमोज्वलगुणगणसहितपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ४१ ॥

बुद्धेर्विशुद्धिंप्रतिपद्यतत्वप्रकाशने यातितमां महत्वं ।
वाचस्पतिंचाप्यतिवर्तमानः श्रीवर्द्धमानोभ्यवतात्सदानः ॥ ४२ ॥

ॐ ह्रीं वाचस्पतिसमानपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ४२ ॥

नवापिनित्यंनिधयोधिकारात् रत्नानितत्वद्धिगुणानिचारात् ।
नमन्तिदेवामनुजाः खगाश्वपादावुदारौ जिनपूजकस्य ॥ ४३ ॥

ॐ ह्रीं चक्रवर्तिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं ॥ ४३ ॥

रमापियस्याः पदपद्मदासी मनोजकान्तापिसुरूपराशिः ।
एतादृशीस्त्री च भवेन्नरस्य जिनेन्द्रदेवस्तवकारकस्य ॥ ४४ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं उभयकुलकमलविकासनसूर्यांशुसमाचरणप्रतिष्ठितगुणमंडित अत्यन्तसुन्दराकृति पुत्रवन्तिगेहमंडनपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं ॥ ४४ ॥

समर्चनासंस्तव वन्दनानिदत्या समं श्रावक सद्व्रतानि ।
तेषांमिदानीमुपलब्धिबुद्धिर्भवेज्जनानां जिनपूजनेन ॥ ४५ ॥

ॐ ह्रीं श्रावकसद्वृत्तकरणबुद्धिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं ॥ ४५ ॥

शरत्कालकलापूर्णा समस्ताह्लादकारिणी ।
इन्द्रस्य भुवनेकीर्तिः श्रीशांतिजिनपूजनात् ॥ ४६ ॥

ॐ ह्रीं परमोज्वलकीर्तिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं ॥ ४६ ॥

श्रेयां नराधीशइवाधिकारी कुबेरदेवोपमपुण्यकोशः ।
श्रीदानवीरत्वपदस्यमर्त्यः भवेज्जिनाधीश्वरपूजनेन ॥ ४७ ॥

ॐ ह्रीं गर्वरहितपरमलक्ष्मीपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलं ॥ ४७ ॥

तिर्यग्नरकगत्योश्चस्वप्नेऽपिगमनं न वै ।
नरदेवगतीलोकेभवतो जिनपूजनात् ॥ ४८ ॥

ॐ ह्रीं नरकतिर्यंचगतिरहितनरसुरगतिसहित भवप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ४८ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तीर्थंकरत्वंभुविदुर्लभंयद्यतस्त्रिलोक्यास्तिलकत्वमीति ।
तस्याधुनाषोडशकारणानिप्राप्नोतिमर्त्योजिनपूजनेन ॥ ४९ ॥

ॐ ह्रीं षोडशकारणभावनासाधनबलपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ४६ ॥

तीर्थंकरत्वं भुविदुर्लभं यच्छ्री षोडशस्वप्नततिं प्रशस्तां ।
प्रागेवयस्याधिकरोतिमाता हस्तस्थितं तज्जिनपूजकस्य ॥ ५० ॥

ॐ ह्रीं जिनजननीतुल्यैकजननीपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ५० ॥

तीर्थंकरत्वंभुविदुर्लभंयज्जन्माभिषेकः सुरशैलमूर्ध्नि ।
प्रक्रम्यतेदेवगणैर्यदस्यहस्तस्थितं तज्जिनपूजकस्य ॥ ५१ ॥

ॐ ह्रीं मेरुशिखरे स्नानयुक्तपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ५१ ॥

अनन्तशर्मदादीक्षा सिद्धानां साक्षिपूर्विका ।
सम्भवेद्भव्यजीवानां पूजनेनार्हतां तथा ॥ ५२ ॥

ॐ ह्रीं सिद्धसाक्षि दीक्षाकारिभवप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ५२ ॥

वज्रवृषभनाराचसंहननंचमोक्षदं, इत्थंशरीरमिच्छामिमोक्षदं जिनशासनात् ॥५३॥

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराचसंहननमुक्तिप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ५३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्शनंज्ञानचारित्रंयथाख्यातंजिनागमे, तथैवपालनेशक्तिंदधाति जिनपूजकः ।।५४।।

ॐ ह्रीं यथाख्यातरत्नत्रयाचरणयुक्तबलप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।। ५४ ।।

स्वात्मध्यानामृतस्वादं चिदानंदंविना परं ।
न जानाति सजानाति जिनाख्याश्रितमद्भुतम् ।। ५५ ।।

ॐ ह्रीं स्वात्मध्यानामृतस्वादसहितभवप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।। ५५ ।।

यस्मिन् समवशरणे भव्या शृण्वन्ति देहिनः ।
धर्मामृतंतदाप्नोति जिनदेवस्य पूजनात् ।। ५६ ।।

ॐ ह्रीं समवशरणविभूतिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।। ५६ ।।

दिव्यध्वनिरहोरात्रेभवेद्वारचतुष्टयं ।
एतादृशीभवेच्छक्तिपूजनेन किलार्हतः ।। ५७ ।।

ॐ ह्रीं सत्केवलज्ञानविभूतिपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।। ५७ ।।

अष्टकर्मविनिर्मुक्तं गुणाष्टकसमन्वितं ।
निरंजनंपदं देव–पूजनेनाप्यते जनैः ।। ५८ ।।

ॐ ह्रीं निरंजनपदप्रदाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ।। ५८ ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चिच्चानन्दकरंदृष्ट्वा जिनांघ्रिकमलद्वयं ।
तथैवानन्ददातारंसद्गुणौघमहं यजे ॥ ५९ ॥
ॐ ह्रीं मनोनन्दकरणसमर्थाय जलम् ॥ ५६ ॥

वाक्यानंदकरंश्रुत्वापठन्जिनगुणोच्चयं ।
तथैवानन्ददातारमास्यालंकारमर्चये ॥ ६० ॥
ॐ ह्रीं वचनानन्दकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ६० ॥

कायानन्दकरं दृष्ट्वा जातरूपं धरं परं ।
तथैवानन्ददातारं जिनराजमहं यजे ॥ ६१ ॥
ॐ ह्रीं कायानन्दकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलम् ॥ ६१ ॥

मनसास्मरणंकृत्वातत्फलंमर्थवर्गदं ।
शांतिनाथार्चने पुण्यात्किंचित्रमर्थसाधनं ॥ ६२ ॥
ॐ ह्रीं अर्थवर्गसिद्धसाधनकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलं ॥ ६२ ॥

वाक्येनस्तवनंकृत्वा तत्फलं कामवर्गदं ।
शांतिनाथार्चने पुण्यात् किंचित्रमर्थसाधनं ॥ ६३ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं कामवर्गसाधनकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलं ॥ ६३ ॥

कायेनपूजनंकृत्वा तत्फलंमोक्षवर्गदं ।
शांतिनाथार्चनेपुण्यात् किंचित्रंमोक्षसाधनं ॥ ६४ ॥

ॐ ह्रीं मोक्षवर्गसाधनसिद्धकरणसमर्थाय श्रीशांतिनाथाय जलं ॥ ६४ ॥

ऋध्यङ्ककोष्टसंयुक्ते चतुर्थवलयेस्थितान् ।
देवाधिदेवानत्राहंभक्त्या पूर्णार्घतो यजे ॥ ६५ ॥

ॐ ह्रीं चतुःषष्टिऋद्धिसमानांगाय श्रीशांतिनाथाय जलं ॥ ६५ ॥

शून्याक्षिचन्द्रसम्मानदेवानां परिमंडलं ।
पूर्णार्घतोऽहमर्चामि भुवि विघ्नोपशांतये ॥ ६६ ॥

ॐ ह्रीं शतैकविंशति अंगाय पूर्णार्घ्यं ॥ ६६ ॥

विनार्हन्तं न जीवानां शरणं समुदीक्ष्यते ।
बुऽतांनौरिवालम्बः जिनपूजाभवाम्बुधौ ॥

॥ इतीष्टप्रार्थनापुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रवशांतिं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा, जातिपुष्प तथा लवंग से १०८ जाप देवें ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

❀ अथ जयमालिका ❀

द्वादशसंख्यंरतेरधीशं, पंचममेवं चक्रीशम् ।
षोडशमधुनासुजिनाधीशं प्रणमामि सदा शान्तीशं ॥ १ ॥

जयभवनिधितारक शांतिनाथ, जयकर्मविदारक शांतिनाथ ।
जयविघ्ननिवारक शांतिनाथ, जयमोहप्रहारक शांतिनाथ ॥ २ ॥

जयसद्गुणधारक शांतिनाथ, जयमंगलकारक शांतिनाथ ।
जयहितसुविचारक शांतिनाथ, जयमन्मथमारक शांतिनाथ ॥ ३ ॥

जयपापविखंडन शांतिनाथ, जयजनसुखमंडन शांतिनाथ ।
जयज्ञानविभाकर शांतिनाथ, जयदृक्शोभाकर शांतिनाथ ॥ ४ ॥

जयसम्यक्साधन शांतिनाथ, सुगतेराराधक शांतिनाथ ।
जयकुगतिगृहार्गल शांतिनाथ, जयदुःखहननशुभ शांतिनाथ ॥ ५ ॥

जयशांतिनाथजगतांमातः जयभुवनत्रयपरमपिताऽतः ।
जयशांतिनाथपरमार्थमते जयहितसंदेशक देहभृते ॥ ६ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयरोगशोकहर शांतिनाथ, जय संपत्तिसुकर शांतिनाथ।
जयशांतिनाथ शिवसुखकारिन्, जयशांतिनाथभवभयहारिन् ॥ ७ ॥
जयशांतिनाथजयमदमर्दन जयशांतिनाथ गुणगणवर्धन।
जयभूतपिशाचभयापहार, जयतस्करकृतदुःखोपचार ॥ ८ ॥
जयजयभोग्रहबाधापकार, जयविगतव्यालादिप्रचार।
जयभव्यकमलबोधनदिनेश, जयचिदानन्दकारक जिनेश ॥ ९ ॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कर्माधिष्ठित जीवेन पापमर्जित मंजसा।
दधेतत्क्षालना येष्ठां शांतिधारां जिनांघ्रये ॥ इति शांतिधारा ॥

* आरती *

[रचयिता—ब्र० सूरजमल जैन]

ॐ जय शांतिनाथ स्वामी। प्रभु जय शांतिनाथ स्वामी।
मन वच तन से बन्दूं २—जय अन्तरयामी ॥ ॐ जय० ॥ १ ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गर्भ जन्म जब हुआ आपका, तीन लोक हर्षे । स्वामी० ।
इन्द्र कियो अभिषेक शिखरपर २, शिव मग के स्वामी ।।ॐ जय०।।२।।
पंचम चक्री भये आपही, षट् खँड के स्वामी । प्रभु० ।
राज्य विभव को भोगे २, काम देव नामी ।। ॐ जय ।। ३ ।।
अतुल विभव को तृणवत त्यागे, हुवे कर्म नाशी । स्वामी० ।
भये आप तीर्थंकर २, शिवरमणी स्वामी ।। ॐ जय० ।। ४ ।।
वीर सिन्धुको नमस्कार कर, तव आरती स्वामी । प्रभु० ।
"सूरज" शिवपुर पावो २, महा सुक्ख धामी ।। ॐ जय० ।। ५ ।।

अथ प्रशस्तिः ।

जैन दिगम्बरधर्मे श्रीमूलसंघसरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे रम्ये श्रीकुन्दकुन्द मुनिवंशे ।।१।। वेदाब्धिपारप्राप्तः सकलश्रुतविदो पद्मनंदी मुनींद्रः। तत्पट्टे शक्तिकीर्तिः श्रुतजलधिविच्छुद्धसिद्धांतवक्ता ।। तस्य सिंहासनाग्रे कमलशशिमुनिर्भव्य संबोधकारी । तत्पट्टे भव्यबंधुर्जनसुहितकरो लक्ष्मिचंद्रोमुनींद्रः।। २ ।। तद्विष्टरे प्रविख्यातो विद्यानंदी महायतिः। तस्य शिष्यवरो योगी मल्लिभूषण शीलवान् ।।३।।तस्यासने लक्ष्मीचंद्रः ख्यात-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीर्तिर्दिगन्तरे । अहिरदेशे सर्वेपि मुल्हेपुर पट्टके ॥ ४ ॥ दयावान् श्रीदयाचन्द्रो दिगम्बरो जितेंद्रियः । स्वात्मध्यानी महाज्ञानी पंचेंद्रियमनारतः ॥ सकलंकीर्ति-महामुनिनायकं । सकलदिग्तटधीजनमान्यकं ॥ सकल येन कृतं सुकवित्वकं । सकल-भव्यजनस्य सुखदायकं ॥ ६ ॥ तच्छिष्य जिनदासेन साधिता परमादरात् । सेवा-भक्तिसुभावेन कृतसिद्धिगुरोः कृपा ॥ ७ ॥ तत्प्रभावेण दिक्चक्रं विद्वान्सर्वोपि मानितः । रचितं रासिभाषादि पुराणसंस्कृतादिकं ॥ ८ ॥ तस्य शिष्यमहामंद-बुद्धिः केवलबालकः ॥ छंदं पिंगलव्याकरणं धातुरूपादिकं न मे ॥ ९ ॥ शांति दासेति प्रख्यातो निर्बुद्धिश्च सभाजिरे ॥ सत्कविः पद्ममतिर्विद्वान् हास्यं कृत्वा मुहुर्मुहुः ॥ १० ॥ मया श्रुत्वा गुरोः पार्श्वे हास्यहेतुं निवेदयेत् ॥ ब्रह्म श्रीजिन-दासेन आश्वासनं ददौ मम ॥ ११ ॥ तस्याश्वासनमादाय कृत्वा पूजां स्वभक्तितः ॥ संधिस्वराक्षरं रेफं रहितं कविता कृता ॥ १२ ॥ गुरुनाथ महाबोधिः नानासूत्रविदांबरः ॥ मे कवित्वं परिज्ञाय शोधनं कृतं कृतं ॥ १३ ॥ दोषयुक्तोऽपि निर्दोषं कुर्वंति कविसत्तमाः ॥ तस्य प्रज्ञां परीक्षीये वर्णः कोपि न शोधितः ॥१४॥ शांतिनामपुराराध्य द्वितीयाराधितौ गुरु । तेन पूजा कृता पूर्णा । निमित्त मात्र मे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृतं ॥ १५ ॥ पूज्यपाद कृतस्तोत्रं श्रुतसिंधुकृताष्टकं । आशाधरोक्तमादाय प्रथमांतं मया कृतं ॥ १६ ॥ अपराजितमंत्रेण पवित्रीकृतपीठिका । कुन्दकुन्दादिनाम्ना च प्रशस्तकृतपावनं ॥ १७ ॥ ये पठंति पाठ्यन्ति । ये श्रुण्वंत्यैकचेतसा ॥ लेखयंति स्वयं यदा । सर्वस्येदं फलोत्तमं ॥ १८ ॥ इयं पूजा कृतिःपूर्णा । सर्वसामग्रिवर्जिता ॥ सामग्री चैकसंपूर्णा । जिननामाक्षरद्वयं ॥ १९ ॥ शांतिनाथमहापूजा विघ्नपीडादिनाशिका ॥ कल्याणभद्र मांगल्य–। दायका नैव संशयः ॥ श्लोकं सर्व समासंति । असिमार्भक दुर्मति । संख्या संख्ये प्रकर्तव्ये । मे मतिं च गुरुकृपां ॥ २० ॥ यावत् चंद्रश्च मेर्वादिर्दयाधर्मो जिनागमे ॥ तावत् शांतिजिनपूजा चिरं नंदतु भूतले ॥२१॥

इति श्रीब्रह्मश्रीशांतिदासविरचिता शांतिनाथपूजा संपूर्णा । शुभं भवतु । कल्याणमस्तु ।

... वर्णी दि. जैन (शोध) संस्थान
... सं० 4519
(का. वि. वि. वि.) वाराणसी

समाप्तम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

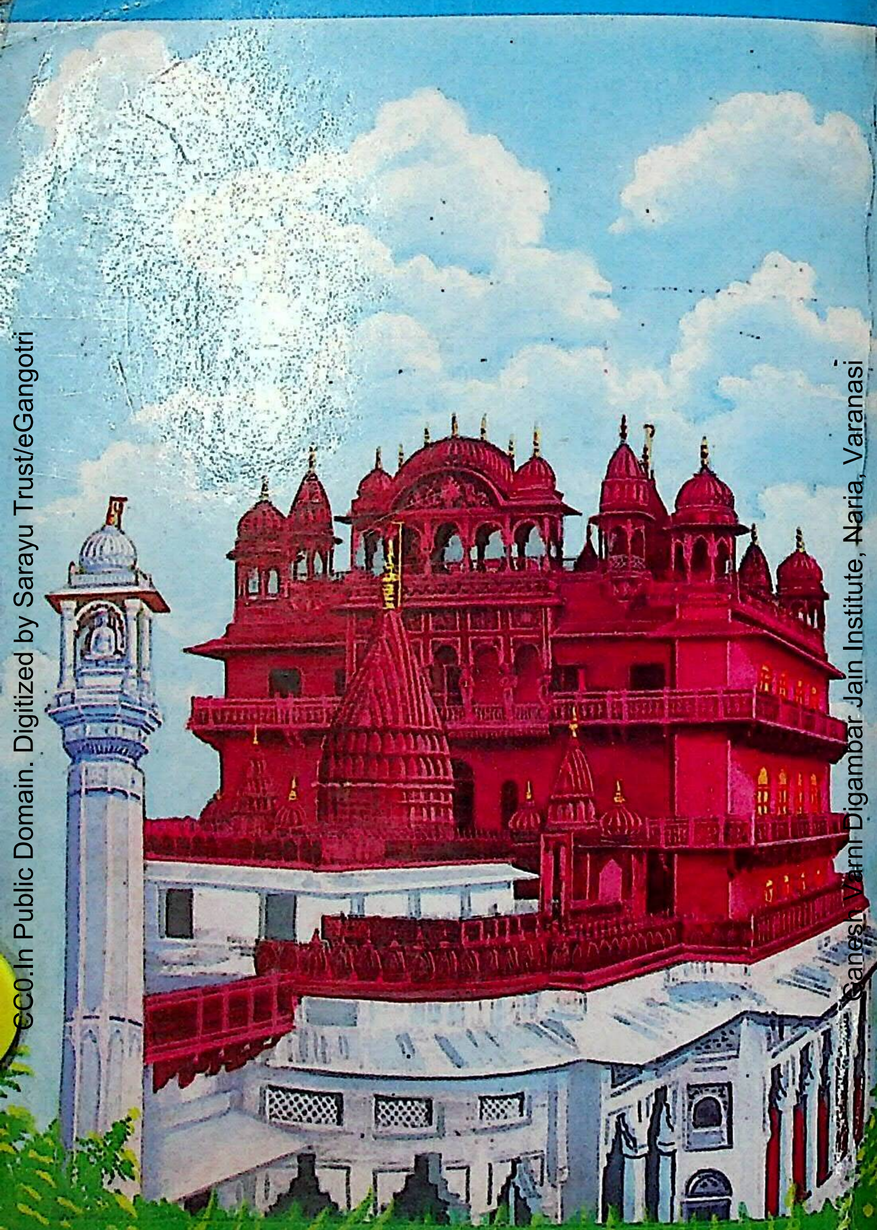

श्री सोनी जी की नसियाँ
अजमेर

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi